ओ३म्

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

आर.एन.आई.सं.
UPHIN/2002/7589
डाक पंजीकरण संख्या-
UPMRD Dn-64/2018-20
दयानन्दाब्द 195
मानव सृष्टि सं.- 1960853120
सृष्टि सं. - 1972949120

ARYAWART KESARI
Amroha U.P.-244221
India

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

वर्ष-18 अंक-21 मिति - फाल्गुन कृष्ण 8 से फाल्गुन शुक्ल 5 सम्वत् 2076 विक्रमी 16 से 29 फरवरी 2020 अमरोहा (उ.प्र.) पृ. 12 प्रति -

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट भवन

आओ चले ऋषि दयानन्द की पावन जन्म स्थली टंकारा

20, 21 व 22 फरवरी को होगा भव्य ऋषि बोधोत्सव

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष बोधोत्सव का आयोजन 20, 21, 22 फरवरी 2020 (वीरवार,शुक्रवार,शनिवार) को महर्षि दयानन्द जन्म स्थली टंकारा में आयोजित किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

सामवेद पारायण यज्ञः 15 फरवरी से 21 फरवरी 2020 तक

ब्रह्मा: आचार्य रामदेव जी

भक्ति संगीतः श्री सत्यपाल पथिक (अमृतसर) डॉ सुकृति माथुर व श्री अविरल माथुर (दिल्ली)

सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्षः

पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी

(प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति/आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवम् ट्रस्टी महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा)

बोधोत्सव

दिनांक 21.02.2020

विशेष श्रद्धांजलि सभा

मुख्य अतिथिः महामहिम आचार्य देवव्रत जी, राज्यपाल गुजरात सरकार
विशिष्ट अतिथिः पद्मभूषण महाशय धर्मपाल, एम.डी.एच. (प्रतिष्ठित उद्योगपति)
श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा
अध्यक्षताः श्री सुरेश चन्द्र आर्य, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

कार्यक्रम के आमन्त्रित महानुभावः स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक सरस्वती (रोजड़), **स्वामी आर्येशानन्द** (माउन्ट आबू), **स्वामी शान्तानन्द** (गुजरात), **स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती** (यमुनानगर) **साध्वी उत्तममायती** (अजमेर), **डॉ. विनय विद्यालंकार** (उत्तराखण्ड) **डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार** (ओ.एस.डी.राज्यपाल गुजरात), **श्री मिठाई लाल सिंह** (प्रधान मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा), **श्री विनय आर्य** (मन्त्री,दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा), **गिरिश खोसला** (वेद पथिक अमेरिका), **भावेश खोसला** (मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका), **अशोक सहगल** (अखिल भारतीय हिन्दु शुद्धि सभा), **श्री मोहन भाई कुण्डारिया** (स्थानीय सांसद), **श्री बल्लभभाई कथीरिया** (राजकोट) एवम् इसके अतिरिक्त देश विदेश से अनेकों विद्वान एवं सन्यासी महानुभाव उपस्थित रहेंगे। दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि टंकारा में चल रहे कार्यों के लिए एवं ऋषि लंगर हेतु अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। यह दान नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑडर द्वारा ''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'' के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयान्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। आप सहयोग **राशि खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, संसद मार्ग नई दिल्ली, IFSC CODE PUNB0015300** में जमा करा सकते हैं। जमा की गई सहयोग राशि, तिथि एवम् पते की सूचना मो. 0950688950 पर देवें।

टंकार ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

निवेदकः- **शिवराजवती आर्या**, उपप्रधाना **रामनाथ सहगल**, मन्त्री

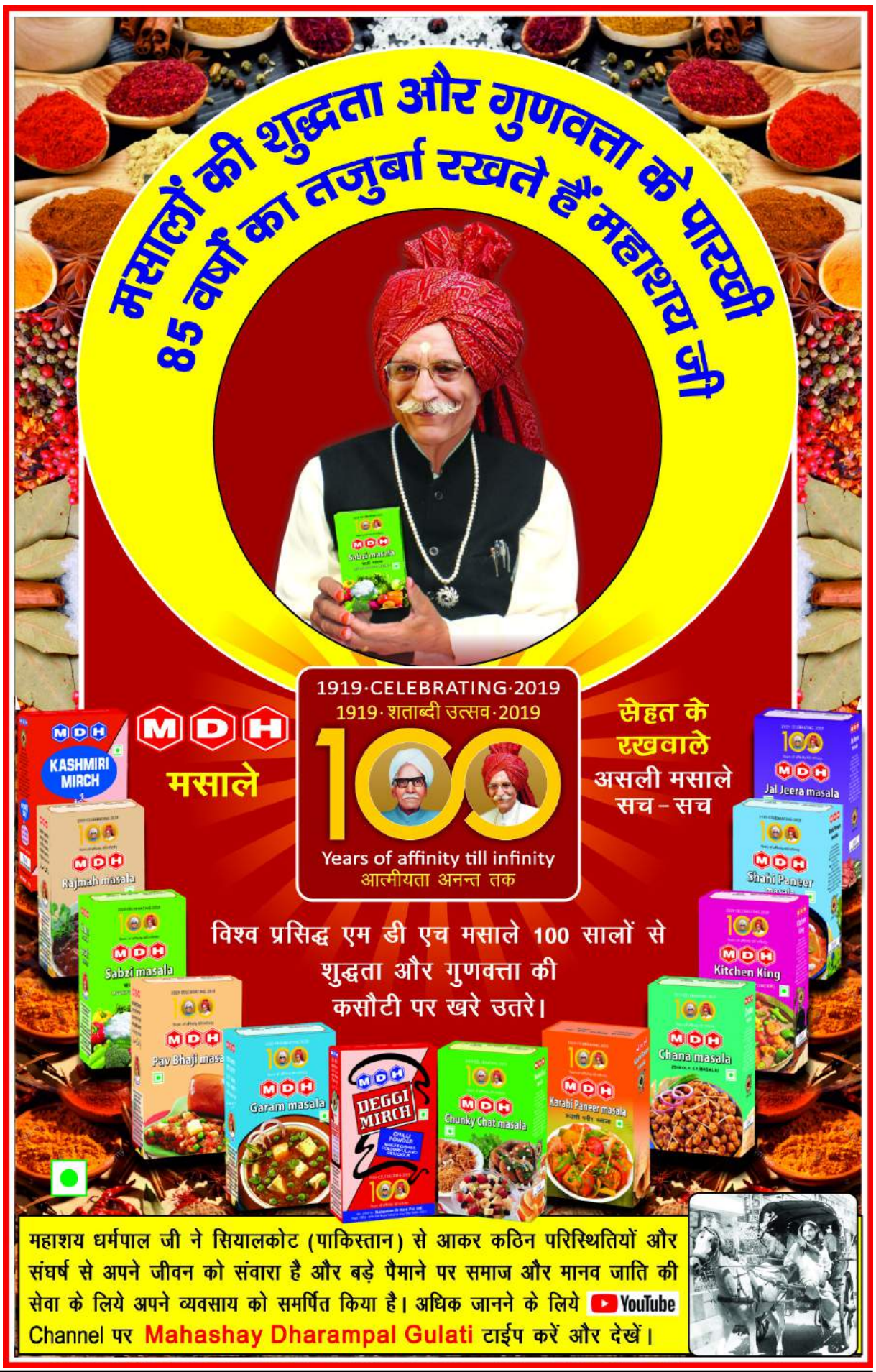

वैवाहिक वर्षगांठ की हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ अर्चना व शिव कुमार तोमर
दिनांक 17 फरवरी

योगनिष्ठ पूनम एवं राकेश चड्ढा
14 जनवरी, कोटा

सीमा व विवेक शर्मा
जयपुर, 27 मार्च

सलोनी एवं मेजर तरूण
26 फरवरी

तान्या एवं पवन
इंग्लैण्ड, 20 फरवरी

रजनीश एवं रवीन्द्र रूस्तगी
18 फरवरी, लखनऊ

हिना एवं हिमांशु
अमेरिका, 10 फरवरी

जितेन्द्र एवं वीनू पंत
25 फरवरी

अर्चना एवं डॉ0 प्रवाल
1 फरवरी, कोटा

नीलम एवं प्रत्यूष
5 फरवरी, उदयपुर

विनय प्रकाश आर्य एवं अंजु आर्या के परिवार में खुशियों की आयी बहार। अमरोहा रीगल 77 में हुआ भव्य समारोह। नवाजात पौत्र अगस्त (पुत्र मयंक एवं गरिमा) के नामकरण, पौत्र सोमिल के जन्म दिवस (आर्य समाज अमरोहा के मंत्री अभय आर्य व तुलिका आर्य के पुत्र) तथा हाल ही में चीन में फिटनेस में बनी मिसेज यूनिवर्स युक्ति आर्या के सम्मान समारोह का हुआ भव्य आयोजन

चीन में आयोजित फिटनेस में मिसेज यूनिवर्स से सम्मानित हुई आर्य परिवार की युक्ति आर्या पुत्रवधु विनय प्रकाश आर्य, अमरोहा।

जन्म दिवस की शुभकामनाएं

अनुष रूस्तगी
14 फरवरी, रेवाड़ी

जितेन्द्र पंत
14 फरवरी, लखनऊ

पूनम रूस्तगी
2 फरवरी

शिशु जन्म की हार्दिक बधाई

आशीष व तन्वी की नवजात बालिका के जन्म की हार्दिक बधाई तथा वात्सल्य की अनुभूति पर ढेर सारी शुभकामनाएं-
_आर्यावर्त केसरी परिवार

।। ओ३म् ।।

दर्शन योग महाविद्यालय द्वारा आयोजित वडोदरा स्थित सुखधाम वानप्रस्थ आश्रम में सुविधायुक्त आवासीय शिविर...

ईश्वर, आत्मा, संसार के यथार्थ स्वरुप को जानने, समझने तथा मौन, ध्यान का अभ्यास करने के लिए सुंदर अवसर

विवेक वैराग्य योगसाधना शिविर

- आयोजक -
दर्शन योग महाविद्यालय,
आर्यवन, रोजड़, साबरकांठा (गुजरात)
संपर्क सूत्र - 9409415011
9409415017,8469567330

- प्रबंधन सहयोगी -
• श्री संजयभाई प्रजापति, अहमदाबाद
• श्री प्रहलादभाई ठाकर, वडोदरा
• श्री प्रवीणभाई कोरडिया, वडोदरा
• श्री रमेशभाई घांघर, धांगध्रा

दि. : 2 से 7 अप्रैल 2020

-: शिविर स्थल :-
सुखधाम वानप्रस्थ आश्रम,
पंचमुखी हनुमान मंदिर के सामने, डभोई सिनोर रोड,
गांव-साठोद, तहसील-डभोई, जिला- वड़ोदरा (गुजरात)

- शिविर प्रशिक्षक -
पूज्य स्वामी ब्रह्मविदानंद जी सरस्वती
आचार्य ईश्वरानन्द जी

(7 अप्रैल को शिविर समापन सत्र में श्रद्धेय आचार्य दिनेश कुमार जी का मार्गदर्शक प्रवचन रहेगा।)

सम्पादकीय

वर्षो से इंसान के अंदर एक लालसा रही है टू नो द फ्यूचर कि कल क्या होगा। हर आदमी के दिल के अंदर एक तड़प सी उठती है कि कल क्या होगा ? परन्तु भगवान ने हमें यह अधिकार नहीं दिया है, क्योंकि अगर हमें यह पता लग जाये कि कल क्या होगा ? अगले महीने क्या होगा? तो हमारा जीना ही मुश्किल हो जायेगा। पता लगे कि कुछ बुरा होने वाला है तो हम वर्तमान में जी नहीं सकेंगें। टेंशन में अच्छा होगा पता लग जाये तो पुरूषार्थ करना बंद कर देंगे तो भी जीवन कैसे चलेगा। कब क्या होगा किसी को मालूम नहीं। शायद इसीलिये जीवन सुख-दुख दोंनों के साथ सुचारू रूप से चल रहा है, परंतु हमें भविष्य जानने की उत्सुकता बनी रहती है। इसी कारण जोग ज्योतिषियों के पीछे भागते रहते हैं और ज्योतिषी ऊट-पटांग बातें बताते रहते हैं कि ऐसा कर लो, वैसा कर लो। टेलीविजन चालू करो तो कई ऐसे चैनल मिलते हैं जिन पर ज्योतिष चल रहा होता है कि यदि आप इन तारीखों में पैदा हुए थे तो आपकी जिंदगी ऐसी होगी। अगर उन तारीखों में लाखों आदमी पैदा हुए थे तो क्या उन सबकी जिंदगी वैसी ही है? यह पूरी तरह से गलत है। अगर आप एक लाख आदमियों की स्टडी करो और देखो कि जो न प्लेनिट्स की मूवमेंन्ट के हिसाब से पैदा हुए, देखा गया कि इनमें 99.99 प्रतिशत व्यक्तियों की जिन्दगी अलग अलग है। अब ज्योतिष आपको बोलें कि आपकी जिन्दगी वैसी हो जायेगी ये बिल्कुल गलत चीजें फैली हुई हैं। आर्य समाज इसे नहीं मानता। आर्य समाज स्टडी ऑफ प्लेनिट्स को तो मानता है, प्लेनिट्स की मूवमेंन्ट को तो मानता है, उसकी स्टडी को अच्छी तरह पहचानता है लेकिन उसके फलदोषों को (कि उसकी वजह से यह हुआ) नहीं मानता।

हमारा जो आजकल का वर्तमान है, भविष्य तो इसी में बनेगा। जो हमारा बीता हुआ कल था और वर्तमान में हम जो कर रहे हैं, इसी के आधार पर हमने अपने भविष्य की नींव रखनी है। यदि भविष्य देखना हो तो अभी देखो कि क्या कर रहे हैं हम ? अपने आप को देखो कि कैसे कर्म कर रहे हो। आपको आपका भविष्य नजर आ जाएगा। अपने वर्तमान को, अपने बीते हुए कल को गौर करते हुए जो टाइम आपको मिला है, उसका सही उपयोग होगा। आपका भविष्य सही होता चला जायेगा, लेकिन अगर आप उसका गलत उपयोग करोगे तो गलत भविष्य बनता चला जायेगा, लेकिन अगर आप इसका गलत उपयोग करोगे तो गलत भविष्य बनता चला जायेगा। कई लोग इस बात को मानते नहीं है।

राम भरोसे बैठकर रहो खाट पर सोए,अनहोनी होनी नहीं, होनी है वो होए।

इसको आर्य समाज बिलकुल नहीं मानता। हम तो मानते हैं कि भगवन मुझे सही राह दिखा। मैं, मेहनत करूंगा। मैं भागूंगा, जिधर भी जाना पड़ेगा जाऊंगा, गुझे सही राह दिखा दे बस। बाकी मेरी मेहनत और मैं खुद वहां पर पहुंचूंगा। उस मेहनत के बाद मुझे जो पुरस्कार मिलेगा, वह भी मैं तेरे ऊपर छोड़ता हूं-ना दे। दे बत भी तेरा भला, न दे तब भी तेरा भला। ये आर्य समाज मानता है और इसी हिसाब से हम सब लोग चलते हैं। आप हमारे प्रधानमंत्री जी को ले लें। वह भी लगे हुए हैं नई-नई योजनाएं बनाने में। भारत को उन्होंने सुपर पावर बनाना है, सुपर पावर की ओर ले जाना है। बुलेट ट्रेन 2022 में आ जायेगी। कुछ तो हो रहा है कहीं तो हो रहा है। यह केवल उनकी सात्विक मेहनत और ईमानदारी के करने का ही फल है। वह हमें भविष्य दिखा रहे हैं, असल में हमारा वर्तमान क्या है ? वर्तमान में इस समय इंसान नीचे से नीच हरकत कर रहा है। बच्चे विद्यालयों में सुरक्षित नहीं, यहां तक कि घरो में भी सुरक्षित नही। रोज कोई न कोई समाचार आप पढ़ते ही हैं।कितनी ही घटनाएं रोज अखबार में छप रही है पहले दस साल की बच्ची, उसके साथ घिनौनी हरकती की गई। दस साल की बच्ची ही नहीं,आठ साल की बच्ची। और पिछले दिनों मैंने पढ़ा कि तीन साल की बच्ची.... शर्मनाक। मुझे तो वाकई अपने ऊपर शर्म आ रही रही है कि मैं इसी समाज का सदस्य हूं। आप सबको भी शर्म आ रही होगी, अखबार जब पढ़ते होंगे। हम सब भी, मुझे पूरा यकीन है कि भारतीय हैं। हमारे ही भाई-बंधू है यह लोगा। क्यों हो रहा है ऐसा ? क्या करें इसको रोकने के लिए? हमारे पास वे ताकत है। बीस लाख बच्चे है। साठ हजार अध्यापक है, स्टाफ है। आपके सबसे अपने-अपने संपर्क हैं। कितने ही आर्य समाज है कितने ही आर्य समाज के सदस्य हैं, अगर हम सभी लोग सोए रहे कि वह मेरा बच्चा तो नहीं है ना। हमें, मैं और मेरा परिवार बस और कोई नहीं की भावना को तोड़ना होगा और हम सब एक परिवार है को सोचना होगा।

मुझे तो बहुत तकलीफ थी कि इसका क्या करें। कैसे हम लोग कुछ तो करें। हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें कि मै तो आप काम कर रहा हूं। डी.ए.वी. के कॉलेज चल रहे हं, स्कुल चल रहे हैं। हम तो बहुत व्यस्त हैं। ये जितनी भी कुर्सियां हैं, छि जायेंगी। तब क्या जाबव दोगें अपने आप को? मैं क्यों चुप रहा, जबकि मैं कुछ कर सकता था। मेरे हिसाब से समय आ गया है-जागें हम सब और लागकर इसके बारे में कोई ठोस कदम उठाया जाये।

मत चूको चौहान : वसन्त पंचमी का शौर्य

चार बांस, चौबीस गज, अंगुल अष्ठ प्रमाण!
ता उपर सुल्तान है, चूको मत चौहान!!

वसंत पंचमी का दिन हमें "हिन्दशिरोमणि पृथ्वीराज चौहान" की भी याद दिलाता है। उन्होंने विदेशी इस्लामिक आक्रमणकारी मोहम्मद गौरी को 16 बार पराजित किया और उदारता दिखाते हुए हर बार जीवित छोड़ दिया, पर जब सत्रहवीं बार वे पराजित हुए, तो मोहम्मद गौरी ने उन्हें नहीं छोड़ा। वह उन्हें अपने साथ बंदी बनाकर काबुल अफगानिस्तान ले गया और वहाँ उनकी आंखें फोड़ दीं।

पृथ्वीराज का राजकवि चन्द बरदाई पृथ्वीराज से मिलने के लिए काबुल पहुंचा। वहां पर कैद खाने में पृथ्वीराज की दयनीय हालत देखकर चंद्रवरदाई के हृदय को गहरा आघात लगा और उसने गौरी से बदला लेने की योजना बनाई।

चंद्रवरदाई ने गौरी को बताया कि हमारे राजा एक प्रतापी सम्राट हैं और इन्हें शब्दभेदी बाण (आवाज की दिशा में लक्ष्य को भेदनाद्ध चलाने में पारंगत हैं, यदि आप चाहें तो इनके शब्दभेदी बाण से लोहे के सात तवे बेधने का प्रदर्शन आप स्वयं भी देख सकते हैं।

इस पर गौरी तैयार हो गया और उसके राज्य में सभी प्रमुख ओहदेदारों को इस कार्यक्रम को देखने हेतु आमंत्रित किया।

पृथ्वीराज और चंद्रवरदाई ने पहले ही इस पूरे कार्यक्रम की गुप्त मंत्रणा कर ली थी कि उन्हें क्या करना है। निश्चित तिथि को दरबार लगा और गौरी एक ऊंचे स्थान पर अपने मंत्रियों के साथ बैठ गया।

चंद्रवरदाई के निदेर्शानुसार लोहे के सात बड़े-बड़े तवे निश्चित दिशा और दूरी पर लगवाए गए। चूँकि पृथ्वीराज की आँखे निकाल दी गई थी और वे अंधे थे, अतः उनको कैद एवं बेड़ियों से आजाद कर बैठने के निश्चित स्थान पर लाया गया और उनके हाथों में धनुष बाण थमाया गया।

इसके बाद चंद्रवरदाई ने पृथ्वीराज के वीर गाथाओं का गुणगान करते हुए बिरूदावली गाई तथा गौरी के बैठने के स्थान को इस प्रकार चिन्हित कर पृथ्वीराज को अवगत करवाया

चार बांस, चौबीस गज, अंगुल अष्ठ प्रमाण।
ऊपर सुल्तान है, चूको मत चौहान।।

अर्थात चार बांस, चैबीस गज और आठ अंगुल जितनी दूरी के ऊपर सुल्तान बैठा है, इसलिए चौहान चूकना नहीं, अपने लक्ष्य को हासिल करो।

इस संदेश से पृथ्वीराज को गौरी की वास्तविक स्थिति का आंकलन हो गया। तब चंद्रवरदाई ने गौरी से कहा कि पृथ्वीराज आपके बंदी हैं, इसलिए आप इन्हें आदेश दें, तब ही यह आपकी आज्ञा प्राप्त कर अपने शब्द भेदी बाण का प्रदर्शन करेंगे।

इस पर ज्यों ही गौरी ने पृथ्वीराज को प्रदर्शन की आज्ञा का आदेश दिया, पृथ्वीराज को गौरी की दिशा मालूम हो गई और उन्होंने तुरन्त बिना एक पल की भी देरी किये अपने एक ही बाण से गौरी को मार गिराया।

गौरी उपर्युक्त कथित ऊंचाई से नीचे गिरा और उसके प्राण पंखेरू उड़ गए। चारों और भगदड़ और हा-हाकार मच गया, इस बीच पृथ्वीराज और चंद्रवरदाई ने पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार एक-दूसरे को

कटार मार कर अपने प्राण त्याग दिये। "आत्मबलिदान की यह घटना भी 1192 ई. वसंत पंचमी वाले दिन ही हुई थी।" ये गौरवगाथा अपने बच्चों को अवश्य सुनाए

मुझे चुनौती स्वीकार है, मैं अगले दस वर्ष में

१) कम-से-कम चालीस वेद-मन्त्र कण्ठस्थ करूँगा (अर्थात् प्रतिवर्ष चार वेद मन्त्र)

२) कम-से-कम चालीस वेद-मन्त्र को लिख कर अपनी स्वयं परीक्षा लूँगा की जो बोलता हूँ वही लिखता हूँ या लिख पाता हूँ या नहीं ? अपने उच्चारण दोष को सुधारूँगा

३) कम-से-कम चालीस वेद-मन्त्र का अर्थ-ज्ञान भी प्राप्त करूँगा

आइये ! हम सब वचन लें, प्रतिज्ञा करें और वेद-सेवा के लिए छोटा सा काम करें।

धन्यवाद
सादर
विदुषामनुचर
विश्वप्रिय वेदानुरागी

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में (ऋषि जन्मस्थान) टंकारा का एक विशेष महत्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहां पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहां अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देते हैं। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षो से पधार रहे हैं यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है। उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाएं। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रुपए देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाएगी और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाएगा। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक से अधिक सहयोग सदस्य बनकर/ बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत में बनाने का लक्ष्य है।

ऊ-अजय सहगल

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए, और चुनिए एक सुयोग्य जीवन-साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 250/- तथा तीन बार की रु. 350/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.) (चलभाष : 09412139333)

शिवरात्रि पर विशेष

शिव के अलंकारिक यौगिक अर्थ की व्याख्या

सुमनकुमार 'वैदिक'

वैदिक साहित्य जहां यौगिक चर्चाओं से परिपूर्ण है, वहीं वेदमंत्रों की व्याख्या ऋषियों द्वारा अलंकारों से अलंकृत हो रही है, क्योंकि अलंकृत करने से साहित्य और वेदमंत्र के भाव की शोभा की प्रतिभा जहां सुन्दर बन जाती है, सामान्य जन को आध्यात्मिक मार्ग की ओर आकर्षित करने के साथ गूढ़ ब्रह्मज्ञान को सरलता से समझाने के लिए प्रकृति की पुट जोड़ कर अलंकारिक बना प्रस्तुत किया जाता है। किंतु जब अलंकारिक उपमा साहित्य बना ली जाती है। साहित्य और अलंकार दोनों की प्रतिभा नष्ट हो जाती है। महाभारत के पश्चात् योग्य विद्वानों के अभाव होने से वेद की विधा त्याग देने से साहित्य के योगिक ज्ञान के स्थान पर अलंकारिक उपमाओं को देवी देवता और ईश्वर से जोड़कर देखा जाने लगा और इन्हें ऐतिहासिक पात्र बना दिया। जिससे वैदिक साहित्य और संस्कृति क पतन होने के साथ उसे कपोल कल्पित माना जाने लगा। जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्र में विधर्मी संस्कृति का प्रसार बढ़ने लगा। जब अलंकार और ऐतिहासिक पात्रों को भिन्न रूप से विचारा जाएगा, तो वह ज्ञान की पूंजी बन भारतीय संस्कृति पर किये जाने वाले आक्रमण का सही उत्तर होगा।

हमारे साहित्य और शास्त्रों में शिव, विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र, पार्वती, दुर्गा, काली यज्ञ इत्यादि शब्द यौगिक और अलंकारिक दोनों संदर्भों में प्रयुक्त हुए हैं, किंतु जनसामान्य ने उसके योगिक अर्थ के स्थान पर अलंकारिक अर्थ को स्वीकार कर लिया है। जैसे शिव का वर्णन यौगिक रूप में जिन्हें परमात्मा, आत्मा, पर्वत, औषधि, यज्ञ, विशिष्ट राजा का माना जाता है, वहीं अलंकारिक रूप में सर्पमाला पहने अर्धनग्न, जिनके सिर से गंगा बह रही है, त्रिशूल, डमरूधारी माता पार्वती के साथ दिखाया जाता है।

हमारे यहां शिव का नाम वेद उपनिषद में परमात्मा के लिए आया है। उसमें उसका गान गाया गया है। जिसक महत्ती ब्रह्माण्ड के कण-कण में व्याप्त है, वह अनन्तमयी है। जगत उसका स्वरूप बताया गया है। जो इस संसार को रचाता है और संहार भी कर देता है। वह विज्ञानमयी शिव संकल्पवादी है। ऋषि-मुनि उस शिव की उपासना करते रहे हैं, जो कल्याणकारी है, हमें प्रेरणा देता है, जिसके गुणों का वर्णन महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के तृतीय नियम में बताये हैं। ऋषि-मुनि उन गुणों की आभा में रत होकर अपने में ग्रहण करते रहे और देवता कहलाये। परमात्मा के अनेक नामों में एक नया महादेव भी आता है अर्थात् देवों का देव। काल का भी काल महाकाल कहा जाता है। जिससे राष्ट्र में राजा भी किसी प्रकार का पाप करेगा तो वह उसे भी दृष्टिपात कर लेता है। जो सतो, रजो, तमोगुणी हमारे बाह्य और आन्तरिक जगत में त्रिगुणी बनकर रहता है। वेद की त्रिविद्या में त्रिशूल बनकर रहता है। शिव ने डमरू बजाया और पार्वती ने नृत्य किया का यहां शिव का परमात्मा है और पार्वती प्रकृति है। सृष्टि के प्रारम्भ में १९७२९४९१२१ वर्ष पूर्व परमात्मा ने अपना महत्व रूपी डमरू बजा सृष्टि की उत्पत्ति की, तब प्रकृति रूपी पार्वती नृत्य करने लगी। शिवलिंग की कथा में भी शिव नाम परमात्मा, पार्वती प्रकृति तथा प्राण (महतत्व) लिंग का नाम है। जब संसार में महतत्व बिना प्रकृति के आता है, तो प्रलय मचा देता है। देवता उसे क्षमा याचना करते हैं कि हे पार्वती माता (प्रकृति) तू आ, जिसका नाम भग है, वह लिंग रूपी प्राण को अपने में धारण कर शांत करती है। सृष्टि का प्रारम्भ हो जाता है। जो सृष्टि प्रारम्भ करता है, नाश करता है, उसी का नाम शिव है।

आत्मा भी महादेव शिव है जिसके कारण पंचमहाभूत पंच अग्नियां इससे बने शरीर को प्रकाशित करती रहती हैं। जिसका ज्ञान दसों इन्द्रियों को संयमित कर मन मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करा देता है। आत्मा के आश्रित मन कार्य कर रहा है। इस आत्मा के प्रकाश में रमण करने वाला मन नाना प्रकार से रचनाकार हो जाता है। जब मानव शिव संकल्प धारण कर शिव का पुजारी बनता है, उस समय यह आत्मा प्रभु शिव को पाकर शिव कहलाता है। आत्मा शिव होती है और परमात्मा महाशिव होता है। आत्मा कभी महाशिव नहीं होती, शिव ही कहलाती है। यज्ञ भी महाद.व कहलाता है, जिसके चार श्रृंग (सिर) हैं। जिसके अर्थ यज्ञमान, अध्वर्यु, उद्गाता और ब्रह्मा हैं। जिसके सप्त हस्त होता है, जिसका मुख अग्नि है।

शिव सूर्य को भी कहा गया है, जो अंधकार को नष्ट कर प्रकाश को उत्पन्न करने वाला है। जो स्वतः अपने में प्रकाशित रहता है। एक सौर मण्डल के अन्तर्गत कई पृथिवियां हैं। शिवरात्रि के दिन शिव संकल्प के आधार पर सूर्य का निर्माण हुआ था। शिवरात्रि यह प्रथम रात्रि रूप में आयी, जब मानव का पिण्ड निर्माण हो गया था। शिव संकल्प परमात्मा का संकल्प था, जिससे संसार प्रका.शित हुआ। शिव वह द्रव्यपति जो अपने द्रव्य को शुभ कार्यों में लगाता है। द्रव्य का याज्ञिक कार्यों में सदुपयोग कर वाममार्गी नहीं बनता।

शिव नाम कुछ औषधियों को भी कहा गया है। उसी के साथ पर्वत राज हिमालय को भी शिव कहते हैं। जिसके सर्वत्र अंगों से हमारे लिए उपयोगी वस्तुएं झरती हैं। कहीं जल के रूप में, तो कहीं वन-औषधियों, वनस्पतियों के साथ वज्र के रूप में। जिसमें ऐसे-ऐसे प्राणी भी जन्म लेते हैं, जो अनेक प्रकार की औषधियों का स्वरूप धारण कर लेते हैं। हमारे लिए कल्याणकारी है।

शिव नाम राजा का भी आता है। ऐसा राजा जिसकी प्रजा कैलास के समान ऊंचे विचारों वाली और अनुशासित हो। वह स्वयं समाधिस्थ रह सर्पों की माला कण्ठ में धारण कर सभी प्राणियों की रक्षा करने वाला हो। ब्रह्मदेवता हो, न्यायकारी और संसार में प्रतिष्ठित एवं मान्य हो। उस राजा को शिव की उपाधि दी जाती है।

त्रेता के काल में महाराजा शिव जिनका विवाह पार्वती से हुआ था, जिनके राष्ट्र की सर्वत्र पृथ्वी पर मान्यता थी। उनका राष्ट्र इतना विशाल था जिसमें सूर्य कभी डूबता नहीं था। अर्थात् सदैव कहीं न कहीं सूर्य का प्रकाश बना रहता था। जिन्होंनं संसार रूपी गंगा को धारण किया। जो रावण, कुम्भकरण के गुरु तथा गणेश के पिता थे। जिनसे रावण वंश विज्ञानी शिक्षा लेता था। शिव ब्रह्मवेत्ता के साथ महान वैज्ञानिक भी थे। वह भी शिव कहलाये। यह व्यक्ति थे, श्रेष्ठ महामानव थे, परमात्मा नहीं। यह हमें स्पष्ट जानना चाहिए।

शिव उस योगी को भी कहा जाता है, जो सर्पों की माला पहनता है। वह सर्प की माला क्या है। वैदिक साहित्य के अनुसार जब भगवान अहिंसा पर आरूढ़ हो जाता है, उसके पश्चात् उसका कोई शत्रु संसार में नहीं रहता। इसी प्रकार महाराजा शिव के कण्ठ में सर्पों की माला रहने का अभिप्राय यह था कि वह इतने बड़े योगी हो गये थे कि उनका कोई शत्रु नहीं रह गया था। संसार के विष को कण्ठ में धारण करने वाले हिमालय पर विचरण करने वाले महाराजा शिव अपने में कितने तपस्वी थे, जिनके कण्ठ में सर्पों की माला थी। सर्प नाम यहां मन को कहा गया है। जब तक मन में चंचलता रहती है, कोई मानव अपने संकल्प में सफल नहीं हो पाता। ऋषि-मुनियों ने इस अलंकार का विश्लेषण करते हुए कहा कि योगी जब योग साधना में परिणत हो, तब मन रूपी सर्प की माला अपने कण्ठ में धारण कर वह शिव बन जाता है।

हमारा जीवन हमारी मानवीयता शिव संकल्प वाली होनी चाहिए। जब हम यौगिक क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, तब हमें यह प्रत्यक्ष दृष्टिपात होने लगता है। जब तक हम संकीर्णता में रहते हैं, हमारे विचार रूढ़ियों में रहते हैं, तब तक कुछ नहीं जान पाते हैं। शिव की व्याख्या पुरातन काल में भी इसी प्रकार की रही है, किंतु हमारे ऋषियों ने उसके यौगिक अर्थ को पहचाना।

(लेख का आधार ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के प्रवचनों से लिया गया है)

घर वापसी कैसे हो

डॉ० रुद्रदत्त चतुर्वेदी

कुछ हिन्दू भाई विवशता, लोभ या प्राणों के भय से 'अन्य' धर्म स्वीकार कर लेते हैं और मन से समर्पित नहीं होते हैं। वे अपनों को याद करते रहते हैं। उनके लिए पुनः अपने को हिन्दू धर्म में वापसी हेतु सरल विधि लिख रहा हूं। परिवर्तित भाइयों को ३ बार या ११ बार गायत्री मंत्र का पाठ कराकर गंगाजल को पिलाकर उनको स्वीकार नाम देकर पुनः उनकी घरवापसी करा दिया जावे। यह विधि इस्लाम की भांति है, जैसे हिन्दुओं को 'कलमा' पढ़ाकर उन्हें मुसलमान बना दिया जाता है। हिंदू पंडितों ने हिन्दू धर्म का हाजमा कमजोर बना दिया है और वापसी का मार्ग कठोर बना दिया है। मुझसे अनेक मुस्लिम भाइयों ने अकेले में अपनी व्यथा बताकर अपनी धर्म वापसी का मार्ग पूछा है। पंडित हिन्दू सनातन इस मार्ग को कठिन बताकर अपनों को हमेशा के लिए द्वार बन्द कर देते हैं। मेरा उनसे अनुरोध है कि अपनों के लिए मार्ग सरल करें।

-महानगर विस्तार, लखनऊ
फोन : ९४५०९२७६७१

यज्ञ सबसे ऊँचा और महान कर्म

हल्द्वानी(उ०ख०)

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड के पूर्व प्रधान स्व० हजारी लाल अग्रवाल के ९३वें जन्मदिन पर दिल्ली पब्लिक स्कूल हल्द्वानी के प्रांगण में २१ कुण्डीय राष्ट्रकल्याण यज्ञ का आयोजन १३ जनवरी को आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड के प्रधान विनय विद्यालंक.ार के ब्रह्मत्व में किया गया। आर्ष कन्या विद्यापीठ नजीबाबाद की कन्याओं ने वेदपाठ तथा भजनों की प्रस्तुति की। इस अवसर पर स्व० हजारीलाल अग्रवाल के पुत्र भुवनेश, ज्ञानेश व पौत्र विवेक के साथ हल्द्वानी आर्य समाज से जुड़े लोगों ने यज्ञ में आहुतियां दीं। गुरुकुल कांगड़ी से हरिद्वार के वैदिक विद्वान ब्रह्मचारी कृष्णदत्त के शिष्य डॉ० योगेश शास्त्री ने कहा कि यज्ञ संसार का सबसे ऊंचा और महान कर्म कहलाता है। अपने जीवन को यज्ञ से ऊंचा बनाएं, चरित्र और राष्ट्र दोनों का घनिष्ठ संबंध होता है। यदि राष्ट्र से यज्ञ जैसा कर्म चला गया, तो राष्ट्र का प्राण चला जायेगा। भौतिक और आध्यात्मिक दोनों यज्ञों को करने वाला ही यज्ञमान कहलाता है। सुविधा होने पर यज्ञ कैसे करें, इस पर विचार दिये। आचार्य रामचन्द्र (सोनीपत) ने कहा कि संकल्प महान हो, तो व्यक्ति सब कर सकता है। विद्यालयों में संस्कारवान और संकल्पवान बालकों का निर्माण विद्यालय की आचार संहिता उंची बनाकर किया जा सकता है। डॉ० विनय विद्यालंकार ने आज के समय में यज्ञ की आवश्यकता क्यों है, पर विचार दिये।

दिल्ली में होगा अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिल्ली (डॉ० अनिल आर्य)। आर्य केन्द्रीय युवक परिषद के तत्वावधान में स्वामी आर्यवेश, स्वामी प्रणवानन्द, व स्वामी धर्ममुनि के सान्निध्य तथा आर्य नेता डॉ० अशोक कुमार चौहान की अध्यक्षता में ३१ जनवरी से २ फरवरी तक रामलीला मैदान पी.यू. ब्लाक, विशाखा एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली में अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन किया जा रहा है।

इस अवसर पर आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व में २५१ कुण्डीय विराट महायज्ञ का आयोजन भी किया जाएगा। यह जानकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० अनिल आर्य (मोबा० ९८६८०५१४४४) ने दी है।

घर बैठे संस्कृत अध्ययन करें

उच्चारण- शुद्धि, सामान्य-संस्कृत, पाणिनीय व्याकरण (अष्टाध्यायी), दर्शन-शास्त्र आदि विषयों की कक्षाएं इन्टरनेट (स्काइप) पर इच्छुक जन सम्पर्क करें-
आचार्य सत्यवान्, आर्य,
दूरभाष एवं व्हाट्स एप संख्या- 9467248777

मानव सेवा प्रतिष्ठान नई दिल्ली छात्रवृत्ति प्रदान समारोह सम्पन्न

सामाजिक क्षेत्र में अग्रणी मानव सेवा प्रतिष्ठान एवं नोर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी के संयुक्त तत्वावधान में आर्यों के केन्द्र गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली में छात्रवृत्ति प्रदान समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में आयोजित इस छात्रवृत्ति प्रदान समारोह का शुभारम्भ मानव सेवा प्रतिष्ठान के प्रधान चन्द्रदेव शास्त्री के संयोजक में कन्या गुरुकुल एचराकलां जीन्द, कन्या गुरुकुल पाढ़ा करनाल एवं विश्वारा कन्या गुरुकुल रुड़की रोहतक की छात्राओं द्वारा मंगलाचरण एवं भजनों के द्वारा हुआ।

गार्गी कन्या गुरुकुल भैंय्या चामड़ अलीगढ़ के संस्थापक व संचालक स्वामी चैतन्यदेव वैश्वानर ने अपने उद्घाटन भाषण में शिक्षा के महत्व पर बल दिया तथा बच्चों को प्रेरणादायक प्रवचन दिया।

आर्यजगत् की महान विदुषि डॉ. आचार्या सुकामा जी विश्वास कन्या गुरुकुल रुड़की रोहतक ने अपने उद्बोधन में आचार्य एवं शिष्य के सम्बन्ध का परिचय प्रदान करते हुए गुरुकुलों के महत्व पर प्रकाश डाला।

डॉ. अनिल दलाल, जयपाल लाकड़ा, स्वामी धर्मानन्द रोहतक, आजाद सिंह लाकड़ा छोटूराम एजूक. शन सोसाईटी दिल्ली, जाट रतन पत्रिका के सम्पादक जसवीर मलिक रोहतक, डॉ. कुलदीप शास्त्री नरेला, डॉ. विवेकानन्द शास्त्री रोहतक, प्रिंसिपल मुनेष चौधरी, होश्यारी देवी, कन्या इन्टर कॉलेज रढोड़ा बागपत, भाई प्रदीप जी प्रवक्ता सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद टिटोली रोहतक, बहन कीर्ति अवतार रोटरडैम, पण्डिता सुमित्रा दुर्गा रोटरडैम नीदरलैण्ड, डॉ. सन्दीप सिंह अमेरिका, श्रीमती संतोष आर्या अमेरिका आदि अनेक वक्ताओं ने अपनी वाणी एवं उपस्थिति से कार्यक्रम को सुशोभित किया। नोर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी के अध्यक्ष व संस्थापक कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रामस्वरूप आर्य ने अपने उद्बोधन में छात्र-छात्राओं को प्रेरणा देते हुए यह आश्वासन दिया कि हम सदा आपके सहायता के लिए तैयार है। आप अधिक से अधिक पढ़ाई करें आर्थिक समस्या का समाधान हम करेंगे।

भारत से हजारों किलोमीटर दूर रहते हुए भी हम भारतीय अपनी मातृभूमि अपनी कोम के लिए चिन्ता करते हैं, इसलिए हम सभी शुभचिन्तकों के सहयोग से नोर्थ अमे. रिकन जाट चैरिटी के द्वारा भारतवर्ष में अनेक सामाजिक कार्यों के साथ-साथ छात्र-छात्राओं के शिक्षण हेतु अधिक कार्य करते हैं। मानव सेवा प्रतिष्ठान के सभी अधिकारियों की चर्चा करते हुए इस शुभ कार्य के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि रामपाल शास्त्री, डॉ. कंवर सिंह शास्त्री आदि के सहयोग के बिना हम ये कार्य नहीं कर सकते थे।

छात्रवृत्ति प्रदान समारोह के अध्यक्ष पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती ने अपने अध्यक्षीय भाषण में छात्रवृत्ति प्रदान के इस शुभ कार्य के लिए दोनों संस्थाओं की प्रशंसा करते हुए इतिहास की अनेक घटनाओं के माध्यम से छात्रवृत्ति प्रदान के महत्व को बताया।

मानव सेवा प्रतिष्ठान के प्रधान चन्द्रदेव शास्त्री, सोमदेव शास्त्री, हरवीर शास्त्री, राजवीर शास्त्री, रामपाल शास्त्री आदि सभी सदस्यों ने आगन्तुक महानुभावों को ओ३म् गायत्री के पटके एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। उषा आर्या, राजदुलारी ने बहन कीर्ति अवतार पण्डिता, सुमित्रा दुर्गा एवं डॉ. आचार्या सुकामा को सम्मानित किया।अनेक गुरुकुलों के संस्थापक व संचालक कार्यक्रम के अध्यक्ष पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती ने मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा चयनित २५ संस्थाओं, गुरुकुलों के १२५ छात्र-छात्राओं को अपने कर कमलों से लगभग ७ लाख रुपये की सहायता छात्रवृत्ति प्रदान की।

रामस्वरूप आर्य अमेरिका श्रीमती संतोष आर्या अमेरिका, आजाद सिंह लाकड़ा छोटूराम मेमोरियल एजूकेशन सोसाइटी के प्रधान आदि ने नार्थ अमेरिकन जाट चैरिटी द्वारा चयनित ८० छात्र-छात्राओं को १० लाख रुपये की सहायता प्रदान की। संयोजन का निर्वहन करते हुवे रामपाल शास्त्री ने अन्त में सभी का धन्यवाद किया तथा भण्डारे के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

-डॉ. कंवर सिंह शास्त्री
नई दिल्ली

गुरूकुल पौंधा में मानव सेवा प्रतिष्ठान ने किया सम्मान समारोह

दयानन्द वैदिक परिषद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय गुरुकुल महोत्सव में गुरुकुल पौन्धा देहरादून में मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा अभिनन्दन सम्मान समारोह का आयोजन भव्यतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी मानव सेवा प्रतिष्ठान ने विद्वान-विदुषि, आचार्य-आचार्या, भजनोपदेशक, पुरोहित व पत्रकारों का गुरुकुल के विशाल भवन में आयोजित सम्मान समारोह में अभिनन्दन करते हुये उन्हें शॉल-सम्मान पत्र एवं धनराशि प्रदान की गई।

इस शुभ अवसर पर आर्यनेता ठाकुर विक्रम सिंह जी, डॉ. सुमेधा जी प्राचार्या कन्या गुरुकुल चोटीपुरा, बहन कीर्ति अवतार हॉलैण्ड, सोमवीर शास्त्री मन्त्री कन्या गुरुकुल नरेला आदि अनेक विशिष्ट अतिथियों ने अपने उद्बोधन एवं उपस्थिति से कार्यक्रम को गौरवान्वित किया। आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. सोमदेव शास्त्री मुम्बई अध्यक्ष वैदिक मिशन मुम्बई को स्वर्गीय श्री पंडित बलदेव प्रसाद ऋषि तिवारी अमस्टरडैम हॉलैण्ड, मनमोहन कुमार आर्य लेखक व पत्रकार, देहरादून उत्तराखण्ड को स्वर्गीय रामपत आर्य, इस्माईला रोहतक हरियाणा, आचार्या सविता आर्या आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला दिल्ली को स्वर्गीया श्रीमती लज्जावती देवी न्यूजर्सी अमेरिका, आचार्य वेदनिष्ठ आचार्य आर्ष गुरुकुल जूवां सोनीपत हरियाणा को स्वर्गीय चौधरी राजेन्द्र देव सिंह आर्य याकूबपुर झज्जर हरियाणा, मामचन्द पथिक भजनोपदेशक इकबालपुर हरिद्वार को स्वर्गीय देवपाल शास्त्री मकड़ौली कलां रोहतक हरियाणा, वेदवसु शास्त्री पुरोहित देहरादून उत्तराखण्ड को स्वर्गीय विशन नारायण मुखी कीर्तिनगर दिल्ली, आचार्य शरदचन्द आर्य आचार्य शांति आश्रम गुरुकुल लोहरदगा झारखण्ड को स्वर्गीया श्रीमती मुख्त्यारी देवी बेरी झज्जर हरियाणा, आचार्या चन्द्रकला आचार्या कन्या गुरुकुल पंचगावा हरियाणा को परम साध्वी स्वर्गीया श्रीमती वेद कौर आर्या याकूबपुर झज्जर हरियाणा, डॉ. प्रीति विमर्शिनी उपाचार्या जिज्ञासु स्मारक पाणिनी कन्या महाविद्यालय तुलसीपुर मोतीझील वाराणसी उत्तर प्रदेश को स्वर्गीया श्रीमती शीलवती देवी बल्लभगढ़ भरतपुर राजस्थान, आचार्या डॉ. सुकामा रुड़की आचार्या विश्ववारा कन्या गुरुकुल रुड़की रोहतक को स्वर्गीया श्रीमती बरजी देवी धर्मपत्नी खूबराम कलां झज्जर हरियाणा, स्वामी नारदानन्द सरस्वती गुरुकुल आश्रम शांतिवन तांगरपाली बरगढ़ उड़ीसा को स्व. शुभराम सहरावत पालम दिल्ली आदि का सम्मान स्वामी जी एवं मानव सेवा प्रतिष्ठान के अधिकारियों द्वारा किया गया। मानव सेवा प्रतिष्ठान के अधिकारियों के द्वारा आगन्तुक महानुभावों का शॉल व स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया गया। चन्द्रदेव शास्त्री प्रधान, सोमदेव शास्त्री, हरवीर शास्त्री, डॉ. कंवर सिंह शास्त्री महामंत्री, उषा आर्या कोषाध्यक्ष एवं रामपाल शास्त्री कार्यकर्ता प्रधान आदि समस्त कार्यकारिणी को स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती एवं ठाकुर विक्रम सिंह ने अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

-डॉ. कंवर सिंह शास्त्री, पौंधा (देहरादून)

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

❍ रामायण का वास्तविक स्वरूप, पृष्ठ-80, मूल्य-20/- ❍ अर्चना यज्ञ पद्धति, पृष्ठ-48, मूल्य-15/- ❍ यज्ञ पद्धति, पृष्ठ-120, मूल्य-35/- ❍ बन्दा वैरागी (कवि वीरेन्द्र कुमार राजपूत), पृष्ठ-64, मूल्य-16/- ❍ पं. प्रकाशवीर शास्त्री (डॉ. अशोक आर्य), मूल्य- 200/- सैकड़ा ❍ तारा टूटा (वीरेन्द्र कुमार राजपूत), पृ0-52, मूल्य- 14/- ❍ सत्यार्थ प्रकाश, (महर्षि दयानन्द), पृ.-480 (सजिल्द), मूल्य-150/- ❍ आर्य कन्या की सूझबूझ, मूल्य- 8/- ❖ हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आर्यसमाज का योगदान, मूल्य-5/- ❖ यज्ञ और पर्यावरण, मूल्य-5/- ❖ दयानन्द सप्तक, मूल्य-5/- ❖ ब्रह्मराशि, मूल्य-5/- ❖ आर्यसमाज (राष्ट्र कवि रामधारी सिंह 'दिनकर') मूल्य-8/- ❖ सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़ें? मूल्य-1/- ❖ गौकरुणानिधि (महर्षि दयानन्द), मूल्य- 8 रुपये ❖ आर्यसमाज की मान्यताएं (महर्षि दयानन्द), मूल्य- 8 रुपये ❖ आर्योद्देश्य रत्नमाला (महर्षि दयानन्द), मूल्य- 8 रुपये ❖ महर्षि दयानन्द की विशेषताएं (म. नारायण स्वामी), मूल्य-8/- ❖ नीतिशतक (रामकुमार धनुर्धर), मूल्य- 20 रुपये ❖ पुरुष-सूक्त (महर्षि दयानन्द), मूल्य- 20 रुपये ❖ दयानन्द लघुग्रन्थ संग्रह, पृष्ठ- 212, मूल्य- 60 रुपये ❖ मानव कल्याण निधि (पं0 महेन्द्र आर्य), मूल्य- 100 रुपये ❖ कर्तव्यवाद (लक्ष्मीनारायण जिज्ञासु), मूल्य- 14 रुपये।

साथ ही प्रखर राष्ट्रचेता शीर्षक से महापुरुषों की जीवनियां आदि।

आज ही मंगाएं यह उपयोगी साहित्य।

पुस्तकों की खरीद पर विशेष छूट तथा नाम के प्रकाशन की सुविधा उपलब्ध है।

वैदिक साहित्य को जन-जन तक पहुंचाएं। —प्रकाशक (09412139333)

देश-विदेश में प्रसारित होने वाले
आर्यावर्त केसरी
में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

आर्यावर्त केसरी वर्तमान में देशभर के कोने-कोने के साथ ही विश्व के अनेक देशों में प्रसारित हो रहा है। विज्ञापनदाताओं से अनुरोध है कि वे अपने व्यक्तिगत विज्ञापन, शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों के विज्ञापन आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित कराकर लाभ उठायें।

विज्ञापन दर इस प्रकार हैं-

पूरा पृष्ठ रंगीन, एक अंक का शुल्क	- 12000/- रूपये
अन्द के पृष्ठ रंगीन एक अंक, 1/2 पृष्ठ का शुल्क	- 6500/- रूपये
अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/4 पृष्ठ का शुल्क	- 3500/- रूपये

स्थाई अथवा एक बार से अधिक प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों पर विशेष छूट देय है।

-**प्रबन्धक** (विज्ञापन) मोबा. : 8630822099

आर्य समाज कोटा (रज0) में संस्कार शिविर पर विशेष

आर्य समाज कोटा राजस्थान द्वारा
तीन दिवसीय आवासीय व्यक्तित्व विकास एवम वैदिक संस्कार शिविर भव्यता पूर्वक सम्पन्न

कोटा की समस्त आर्यसमाजो द्वारा दिनांक 27,28,29 दिसंबर 2019 को रथकांकरा, रावतभाटा रोड स्थित शिवज्योति आवासीय विद्यालय में तीन दिवसीय आवासीय व्यक्तित्व विकास एवं वैदिक संस्कार शिविर सम्पन्न हुआ ।

शिविर संयोजक आर्यसमाज कुन्हाड़ी कोटा के प्रधान पी सी मित्तल ने अवगत कराया कि उपरोक्त शिविर में कोटा की समस्त 11 आर्यसमजो के अतिरिक्त बूंदी,रावतभाटा ,दिल्ली, हरियाणा,बहरोड़ आदि के 93 शिविरार्थियों ने भाग लिया।

आवासीय शिविर में गांधीधाम गुजरात से आचार्य चंद्रेश जी व सोनीपत हरियाणा के आचार्य संदीप जी एवं कोटा के पी सी मित्तल जी ने तीन दिनों तक शिविरार्थियों को ईश्वर की ध्यान उपासना, योग व्यायाम, ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ(अग्निहोत्र), नैतिक शिक्षा, ज्ञान, कर्म, उपासना,कर्मफल सिद्धांत, ईश्वर की पूजा का वैदिक स्वरूप,संस्कार एवं सदाचार का मानव जीवन मे महत्व,पंचमहा यज्ञो का लाभ एवम सफल गृहस्थ के बारे में अपने अमूल्य वैदिक ज्ञान की वर्षा की।

शिविरार्थी आवासीय शिविर हेतु 26 दिसंबर को सायं को ही

शिविर स्थल पर पहुँच गए ।अगले दिन प्रातः 5 बजे से ही शिविर की दिनचर्या प्रारम्भ हुई जो रात्रि 9 बजे तक प्रतिदिन नियमित रूप से चलती रही। शिविर की विशेषता रही कि सभी शिविरार्थियों ने अपने अपने मोबाइल कार्यालय में जमा करवा दिये।

शिविर का शुभारम्भ कोटा की पूर्व महापौर सुमन श्रृंगी, डीएवी स्कूल कोटा की प्राचार्या सरिता रंजन गौत्तम एवं कृष्णा रोटरी ब्लड बैंक के निदेशक डॉ वेदप्रकाश गुप्ता जी ने दीप प्रज्वलित कर किया।

शिविर के दीक्षांत समारोह में संस्कृत शिक्षा के कोटा संभागीय अधिकारी श्री संजय चावला मुख्यअतिथि एवं कर्नल देवकीनंदन शर्मा विशिष्ठ अतिथि के रूप में पधारें। दीक्षांत समारोह में शिविरार्थियों ने अपनी बहुत सारी बुराइयों को छोड़ने व अच्छाइयों को गृहण करने का संकल्प लिया ,जिनमें पंचमहायज्ञों को दैनिक जीवन में उतारने का संकल्प प्रमुख था।

दीक्षांत समारोह में निम्न शिविरार्थियों ने अपने अनुभव बताये श्री लीलाधर फौजदार, श्री राजेन्द्र सक्सेना,श्री राजेन्द्र मुनि,श्री योगेंद्र आर्य,श्री कैलाश बाहेती, महेश मित्तल, श्योराज वशिष्ठ,स्वाति आर्या,पूजा आर्या, मंजू यादव,देवपाल,रामलखन भदौरिया।शिविर को प्रिंट मीडिया व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में प्रचार प्रसार का कार्य राजस्थान प्रतिनिधि सभा के प्रान्तीय प्रचार प्रभारी श्री अर्जुनदेव चड्ढा ने बहुत ही लगन से किया।

सभी शिविरार्थियो का एक सामूहिक फोटोशूट करवाया गया।शिविर की व्यवस्थाओं से सभी अत्यंत प्रसन्न थे।शिविर का अवलोकन करने हेतु 28 दिसम्बर को प्रांतीय आर्यप्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री देवेंद्र शास्त्री अपनी पूरी टीम के साथ शिविर में उपस्थित हुए।

शिविर संयोजक पी सी मित्तल के अथक प्रयासों व साहस से कोटा के इतिहास में यह पहला अभूतपूर्व आयोजन हुआ इसके लिये कोटा,बूंदी व रावत भाटा की समस्त आर्यसमजो द्वारा पी सी मित्तल जी का सम्मान किया गया।

अन्त में शिविर संयोजक श्री मित्तल ने शिविर हेतु निःशुल्क स्थान प्रदान करने हेतु शिवज्योति स्कूल निदेशक श्री महेश गुप्ता का धन्यवाद दिया।स्कूल के सेवक मोतीशंकर जी का व स्कूल मैस संचालक श्री विनोद जी का सम्मान किया।धन्यवाद के क्रम में आचार्य चन्देश जी,आचार्य संदीप जी, राजेन्द्र सक्सेना जी,राजेन्द्र मुनि जी,सभी कार्यकर्ता गुलाब चंद शर्मा,गुमानसिंह,मनीष गुप्ता,जितेंद्र पारीक,कुलदीप सुमन,लखन सुमन,अजीत नागर,सूरत सिंह ,श्योराज वशिष्ठ,नगेन्द्र कर्णावत ,सतीश वशिष्ठ,प्रांशु आर्य आदि का तहे दिल से धन्यवाद दिया।इसी के साथ तीन दिवसीय शिविर के समापन की घोषणा की गई।

अर्जुनदेव चड्ढा लाइफ टाईम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित

कोटा। कोटा के प्रसिद्ध मानवतावादी समाजसेवी अर्जुनदेव चड्ढा को भव्य समारोह में पंजाबी जन सेवा समिति की ओर से लाइफ टाईम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया।

इस बारे में जानकारी देते हुए षम्मी कपूर ने बताया कि गीता भवन कोटा में आयोजित पंजाबी समाज समिति के 26वें परिचय सम्मेलन के अवसर पर सैंकड़ों लोगों की उपस्थिति में समिति के अध्यक्ष दर्षन पिपलानी, सचिव सागर पिपलानी, कोषाध्यक्ष प्रवीण बाटला, विनोद गैरा, अषोक आहूजा, शम्मी कपूर आदि पदाधिकारियों ने अर्जुनदेव चड्ढा को मोतियों की माला पहनाकर शॉल ओढ़ाकर तथा श्रीफल देकर अभिनंदन पत्र भेंट किया।

कार्यक्रम में चड्ढा को लाइफ टाईम अचीवमेंट अवार्ड देते हुए अध्यक्ष दर्षन पिपालानी ने कहा कि चड्ढा ने समाजसेवा के क्षेत्र में उच्च कीर्तिमान स्थापित किए हैं। सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय की भावना से किए गए आपके मानवतावादी सेवाकार्य सभी के लिए प्रेरणादायक एवं अनुकरणीय हैं इस अवसर पर समिति के सचिव सागर पिपलानी ने अर्जुनदेव चड्ढा के कार्यों के बारे में उपस्थित लोगों को जानकारी देते हुए बताया कि नेत्रदान, एड्स जागरूकता, नशामुक्ति, निशक्तजन सेवा, सेरीबल पॉलिसी जागरूकता, रक्तदान, विद्यालयों में शिक्षण सामग्री तथा गणवेश वितरण, पक्षियों के लिए परिण्डे बांधना, वृक्षारोपण, बाढ़ पीड़ितों की सहायता करना आपके द्वारा किए गए समाजसेवा के कुछ कार्य हैं।

चड्ढा के लाइफ टाईम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित होने पर आर्य समाज के वेदिक विद्वान आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने कहा कि श्री अर्जुनदेव चड्ढा को यह सम्मान प्राप्त होने पर आर्य समाज के सदस्यों ने प्रसन्नता व्यक्त की।

आर्य समाज कुन्हाड़ी कोटा राजस्थान द्वारा
तीन दिवसीय शिविर की चित्रमय झलकियां

शिविर में गूंज उठा महर्षि दयानन्द का सन्देश

निष्ठावान आर्य पूरण चन्द मित्तल

कुन्हाडी आर्य समाज, कोटा के प्रधान श्री पूरन चन्द्र मित्तल आर्य समाज के क्रियाकलापों में निरन्तर लगे रहते हैं। मिलनसार व सहृदय व्यक्तित्व के धनी श्री मित्तल अड़तालिस वर्ष पूर्व आये वीरदल के माध्यम में आर्यसमाज से जुड़े। मूलरूप से गंगापुर सिटी के रहने वाले श्री मित्तल ने बताया कि मैं बचपन में श्री मदन मोहन जी के माध्यम से आर्य समाज से जुड़ा।

एम.टैक तक शिक्षा प्राप्त करके आपने कोटा थर्मल पावर में सेवाएं ही व अधिशासी अभियन्ता के पद से सन् 2019 में सेवा निवृत्ति प्राप्त की । वर्ष 1984 में आपका विवाह श्री मती सरोज जी से हुआ। आपके दो पुत्र क्रमशः आशीष आर्य व यतीन्द्र आर्य तथा एक पुत्री स्वाति आर्या है, जो उच्च शिक्षा प्राप्त करके अपने इच्छित सोपानों में आसीम हैं। किसी भी व्यक्ति की पूर्णता उसके परिवार से होती है। मित्तल जी इस सन्दर्भ में सौभाग्य शाली हैं। कुन्हाड़ी आर्य समाज की स्थापना 2015 में हुई। इसमें मंत्री श्री दामोदर लाल आर्य, उपप्रधान श्री नन्द किशोर राठौर तथा कोषाध्यक्ष श्री भीम राज महावर हैं। यहां साप्ताहिक यज्ञ एवं सत्संग के साथ-साथ हर वर्ष मकर संक्रान्ति पर एक उत्सव किया जाता है। इसके साथ-साथ तीन से सात दिन तक यजुर्वेद पारायण, सामवेद पारायण यज्ञ किये जाते हैं। गत वर्षों में इस आर्य समाज ने वैदिक सत्संग समिति के माध्यम से आर्य लेखक सम्मेलन का आयोजन भी किया ।

कर्मठ व जझारू व्यक्तित्व के स्वामी श्री मित्तल अपने जीवन में भी व्यवस्थित दिनचर्या वाले हैं। वह दैनिक योग की कक्षाएं चलाते हैं व 150 लोगों को योग कराते हैं। पूर्णिमा के दिन पैदा होने के कारण ही उनका नाम पूर्ण चन्द रखा गया। नाम को सार्थक करते हुए व हर कार्य की पूर्णता में विश्वास रखते हैं। हम श्री मित्तल व उनके सभी पदाधिकारियों के निस्तर आर्यसमाज की गमि विधियों के प्रचार-प्रसार में किये जा रहे योगदान की सराहना करते है। केसरी परिवार ऋषि के मिशन में अपने जीवन को त्याग लगाने वाले सभी समाजियों के प्रति आभार व्यक्त करता है व मंगलमय जीवन की कामना करता है।

-सम्पादक

आर्य समाज कोटा ने संस्कार शिविर से जगाई एक नई अलख

शिविर अधिष्ठाता
आचार्य चन्द्रेश जी
गाँधीधाम, गुजरात

शिविर स्थल

शिविर में आने वाले अन्य आचार्य गण

आचार्य संदीप जी — सोनीपत (हरियाणा)
आचार्य रामस्वरूप जी (रक्षक) — (अजमेर)

शिविर में निम्न विषयों पर हुआ सारगर्भित मंथन

- ध्यान–उपासना
- योग–व्यायाम
- ब्रह्मयज्ञ
- देवयज्ञ (अग्निहोत्र)
- ज्ञान–कर्म–उपासना
- कर्म फल सिद्धान्त
- ईश्वर पूजा का वैदिकस्वरूप
- मानव की उन्नति में सदाचार का महत्त्व
- मानव के जीवन में संस्कारों का महत्त्व
- नैतिक शिक्षा
- पंच महायज्ञों का लाभ
- सफल गृहस्थ

संस्कार शिविर की आयोजन समिति

(सेवानिवृत अधिशाषी अभियन्ता)
सम्पर्क सूत्र : 9413349836, 9799498452

शिविर सहयोगी

राजेन्द्र सक्सेना संयोजक पूर्णिमा सत्संग	राजेन्द्र मुनि वानप्रस्थी	महेश गुप्ता डायरेक्टर शिव ज्योति एजु. ग्रुप, कोटा	श्रीचन्द गुप्ता प्रधान नरेन्द्र सिंह कर्णावत मंत्री आर्य समाज, तलवण्डी
के.एल. दिवाकर प्रधान महेन्द्र शर्मा मंत्री आर्य समाज, विज्ञान नगर	कैलाश बाहेती प्रधान रमेश गोस्वामी मंत्री आर्यसमाज, रामपुरा	आर.सी. आर्य प्रधान राधावल्लभ राठौर मंत्री आर्य समाज, महावीर नगर	अरविन्द पाण्डेय प्रधान उमेश कुर्मी मंत्री आर्य समाज, गायत्री विहार
नरदेव आर्य प्रधान ओमप्रकाश आर्य मंत्री आर्य समाज, रावत भाटा	ओमप्रकाश तापड़िया प्रधान नरेन्द्र विजयवर्गीय मंत्री आर्य समाज, तिलक नगर	शिवनारायण उपाध्याय प्रधान डी.पी. मिश्रा मंत्री आर्य समाज, रामपुरा	पी.सी. मित्तल प्रधान डी.एल. आर्य मंत्री आर्य समाज, कुन्हाड़ी
श्रीमती उषा आर्या प्रधान प्रांशु आर्य मंत्री आर्य समाज, अंजली विहार	गिरिराज सिंह प्रधान देवेन्द्र सक्सेना मंत्री आर्य समाज, भीममंडी	हरिदत्त शर्मा प्रधान कर्ण सिंह आर्य मंत्री आर्य समाज, रेलवे कॉलोनी	रामनारायण कुशवाहा प्रधान कैलाश नामा मंत्री आर्य समाज, खेड़ा रसूलपुर

व्यवस्था सहयोगी

अर्जुन देव चड्ढा, डॉ. वेदप्रकाश गुप्ता, शोभाराम आर्य, अग्निमित्र शास्त्री, पं. बिरधी लाल शास्त्री, मनीष आर्य, गुमान सिंह, सूरत सिंह, हनुमान प्रसाद शर्मा, कृष्ण गोपाल आर्य, आनन्दी लाल कुशवाहा, एड. चन्द्रमोहन कुशवाहा, भैरूलाल शर्मा, मनु सक्सेना, उमेश कुर्मी, जयदेव आर्य, जगदीश अरोड़ा, मिश्रीलाल यादव, श्योराज वशिष्ठ, अजीत नागर, बीरेश आर्य, प्रभू सिंह कुशवाहा

शिविर हेतु सम्पर्क सूत्र : 9413349836, 8764161699

ऋग्वेद — यजुर्वेद

।। ओ३म् ।।

घर–घर पहुंचाएं ऋषिवर दयानन्द का अमर ग्रन्थ

'सत्यार्थ प्रकाश'

(आकार– 15x20 का चौथा भाग, बड़े व मोटे अक्षरों में प्रिन्ट, पक्की व आकर्षक जि़ल्द)

सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन की आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की एक वृहद्, अनूठी एवं क्रान्तिकारी योजना

पहली बार सत्यार्थ प्रकाश की लगातार एक लाख प्रतियाँ छापने का दृढ़ संकल्प

आओ! आज ही सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन की इस अनूठी योजना से जुड़कर ऋषिवर दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को घर–घर पहुंचाने का स्वप्न साकार करें।

विशेष : सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि में न्यूनतम 1250/ भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश व आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित किये जायेंगे तथा 10 प्रतियां उन्हें नि:शुल्क भेंट की जायेंगी। आप अपनी सहयोग राशि प्रकाशन से पूर्व अथवा आपको सत्यार्थ प्रकाश प्राप्त होने के बाद भी भेज सकते हैं।

।। आपको इस पावन योजना से कैसे जुड़ना है? ।।

- आर्यसमाज की ओर से न्यूनतम 3100/– रुपये की सहयोग राशि भेंट करने पर उस आर्यसमाज के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश तथा आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित होंगे तथा उन आर्यसमाजों को सत्यार्थ प्रकाश की 25 प्रतियाँ नि:शुल्क भेंट की जायेंगी।
- इसी प्रकार 5100/–, 11000/–, 21000/– रुपये आदि की सहयोग राशि व्यक्तिगत अथवा संस्था की ओर से भेंट करने पर भेंटकर्ता महानुभाव अथवा उस संस्था के प्रधान, मंत्री, कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश तथा आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित होंगे तथा उन महानुभावों अथवा संस्थाओं को सत्यार्थ प्रकाश की क्रमश: 40, 90 व 170 प्रतियाँ नि:शुल्क भेंट की जायेंगी।

।। सत्यार्थ प्रकाश की इतनी प्रतियों का आप क्या करेंगे?।।

सत्यार्थ प्रकाश में 'प्रेमोपहार' नाम से जो रंगीन मुद्रित पृष्ठ है, उस पर अपना नाम, उपलक्ष्य आदि अंकित कर किसी भी शुभ अवसर यथा– जन्मोत्सव, जयन्ती, वर्षगांठ, विवाह, गृह प्रवेश, व्यवसायारम्भ, चयन, नियुक्ति आदि अथवा किन्हीं स्मृति दिवसों पुण्यतिथियों, सम्मेलनों, उत्सवों आदि में सम्मान या पुरस्कार स्वरूप अपने प्रियजनों, अतिथियों, प्रतिभागियों को यह पावन ग्रन्थ सादर–सप्रेम भेंट कर सकते हैं। तो आइये, आज ही सत्यार्थ प्रकाश की इस वृहद् योजना से जुड़कर इसके प्रचार–प्रसार में अपना बहुमूल्य योगदान दें और पुण्य के भागी बनें। धन्यवाद,

सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन यज्ञ में आज ही दें अपनी सहयोग रूपी पावन आहुति

सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि हेतु आप अपनी सहयोग राशि भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित 'आर्यावर्त केसरी' के बचत खाता संख्या– 30404724002 (IFSC कोड : SBIN0000610) में जमा करा सकते हैं, अथवा चैक या धनादेश द्वारा भेज सकते हैं। सभी मान्य सहयोगियों के रंगीन चित्र व शुभ नाम सत्यार्थ प्रकाश व आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित किये जाएंगे। सत्यार्थ प्रकाश के इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

: सम्पर्क सूत्र :
डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त प्रकाशन,
सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा–244221 (उ.प्र.)
Mob. : 9412139333, Email : aryawartkesari@gmail.com

सामवेद — अथर्ववेद

स्वामी शक्तिवेश जी के बलिदान दिवस पर दो दिवसीय कार्यक्रम

स्वामी शक्तिवेश जी के बलिदान दिवस पर दो दिवसीय कार्यक्रम पर यज्ञ-सत्संग झज्जर. 8-9.02.2020 स्वामी शक्तिवेश जी बलिदान दिवस का दो दिवसीय कार्यक्रम का गायत्री महायज्ञ एवं श्रद्धांजलि समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। स्वामी श्रद्धानन्द जी पलवल की अध्यक्षता में ब्रसत्य काम दर्शनाचार्य, आचार्य योगेन्द्र जी, भजनोपेदेशक धनीराम बेधड़क, योगाचार्य सत्यपाल वत्स बहादुरगढ़, श्री ओमप्रकाश रोहतक, डॉ. एच.एस.यादव पूर्व कॉलेज प्राचार्य, चन्द्रपाल माजरा, आचार्य वीरसैन, दलीप आर्य, भगवान सिंह, फ्लाईंग ऑफिसर महावीर सिंह, विजय आर्य, सतीश रोहिल्ला, रामभगत खुडन, योगाचार्य रमेश कोयलपुर, तारिक शर्मा, पहलवान प्रेम देव, देवी सिंह आर्य, कुमारी प्राची आर्या, प्रदीप शास्त्री, संजय यादव, जिले सिंह, पं. रामकरण, आचार्य बालेश्वर, प्रा. द्वारका दास, डॉ. श्रीनिवास पूर्व कॉलेज प्राचार्य, जे.के., नवीन आर्य, भूराजप्रिय आदि गणमान्य महानुभावों ने प्रेरणादायक बाते रखी। कर्ण सिंह यादव तथा कुनाल आर्य यज्ञमान तथा ब्र. सुभाष आर्य यज्ञ ब्रह्मा रहें। ब्रसत्य काम जी एवं श्री ओमप्रकाश रोहतक ने समाज में बढ़ती हुई अनैतिकता दु:ख प्रकट करते हुए कहा कि समय रहते इन बुराईयों पर हमने रोक नहीं लगाई तो इसके भंयकर दुश्परिणाम होंगे। आचार्य योगेन्द्र एवं योगाचार्य सत्यपाल वत्स ने शारीरिक उन्नति के लिए विभिन्न यौगिक क्रियाओं का सिखाते हुए हमेशा खुश रहने पर जोर दिया। श्रीमती सरोज आर्या एवं श्री रमेश योगाचार्य की योगा टीम ने अपनी शानदार प्रस्तुति दी तथा योग संबंधित ज्ञान का परिचय दिया। महाशय रामभगत खुडन, प्रेमदेव, लीलाराम, उमेद, धर्मपाल, रामकंवार, ईश्वर, जयवीर आदि महानुभावों ने स्वामी शक्तिवेश जी का संन्यास से पूर्व कृष्णदत्त शर्मा के रूप में गांव माछरौली की सरकारी स्कूल में आदर्श अध्यापक की भूमिका को कृतज्ञता से याद किया

तेजी से हो रहा है आर्य समाज का वैश्विक प्रसार

आर्यनेत्र श्री अर्जुन देव चड्ढा से डॉ0 बीना आर्य का साक्षात्कार

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के 'प्रान्तीय प्रचार प्रभारी' जीवन के पचहत्तर वसंत पार कर चुके अर्जुनदेव चड्ढा जी को यदि ७५ वर्ष का युवा कहूं तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। सुबह से शाम तक आर्य समाज की गतिविधियों में लीन। खोज-खोज कर समाज के दीन दुखियों, असहायों की मदद करना, उनकी नियमित दिनचर्या का एक अंग है। यदि इसे मैं शौक कहूं, तो भी अत्युक्ति न होगी। उत्साह व उमंग से लवरेज सोते-जागते, उठते-बैठते आर्य समाज के बारे में सोचने वाले अर्जुनदेव चड्ढा जी से उनके निवास 'योगाश्रम' विज्ञान नगर, कोटा पर किया गया साक्षात्कार प्रस्तुत है।

इस बार मैं बिना पूर्व सूचना के उनके विज्ञाननगर स्थित आवास पर ११ बजे सुबह पहुँच गयी। नियमित दिनचर्या से निवृत्त होकर विश्राम की मुद्रा में थे। जैसे ही मैंने प्रवेश किया, बड़ी गर्मजोशी से हमेशा की ही तरह स्वागत किया। बातचीत के क्रम को आगे बढ़ाते हुए मैंने उनसे पूछा।

बीना आर्या- आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए आप आज क्या महसूस करते हैं?

अर्जुनदेव पड्ढा- आर्य समाज सेवा के माध्यम से निराश्रित, जरूरतमंद, अभावग्रस्त, असहाय, विकलांग लोगों की सेवा और सहायता करता है। जैसा कि आर्यसमाज के छठे नियम में भी आया है।

इतना होने पर भी किन्हीं कारणों से हमारा दायरा सीमित हो गया है। मेरा मानना है कि आज का युग प्रचार का युग है। अतः मीडिया के माध्यम से आर्य समाजों में हो रहे सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक उपक्रमों की जानकारी आम लोगों तक पहुंचे।

प्रचार के इस युग में हम देख रहे हैं कि दूरदर्शन के माध्यम से कुछ वर्षों पूर्व स्थापित हुए विभिन्न धर्माचार्यों ने स्वयं को स्थापित और प्रचारित कर लिया है, जिनके शिष्यों की संख्या लाखों करोड़ों में है। जबकि आर्य समाज के पास वैदिक सिद्धांत हैं, असली जीवन पद्धति के नियम हैं। शिक्षा है, नारी उत्थान के कार्यक्रम हैं। पर मार्केटिंग में लचर होने के कारण प्रतिस्पर्द्धा की दौड़ में हम पीछे रह गये हैं।

बीना आर्या- क्या आपका मानना है कि आर्य समाज को भी प्रचार-प्रसार के लिए मीडिया या चैनलों का सहारा लेना चाहिए?

अर्जुनदेव चड्ढा- हाँ, क्यों नहीं। देश-काल के अनुरूप हमें भी अपने तौर-तरीकों में बदलाव करना चाहिए।

बीना आर्या- यह बदलाव कैसे लाया जा सकता है।

अर्जुनदेव चड्ढा- आज आवश्यकता है आर्य समाज द्वारा अधिक से अधिक गुरुकुल और विद्यालय खोले जाएं।

बीना आर्या- क्या गुरुकुल खोलने से ही आर्य समाज का प्रचार हो सकता है?

अर्जुनदेव चड्ढा- गुरुकुल एक साधन है। इसके साथ-साथ मीडिया सेंटर बनने चाहिए। इन सेंटरों की स्थापना प्रान्तीय स्तरों पर होनी चाहिए। यूट्यूब, ट्विटर इत्यादि के माध्यम से आर्य संदेशों को जन-जन तक पहुंचाया जा सकता है।

मीडिया विस्तार के लिए हर जिले में मीडिया प्रभारी नियुक्त किये जाएं, जो क्षेत्र में हो रही आर्य समाजों की गतिविधियों को प्रचारित और प्रसारित करें।

बीना आर्या- इन मीडिया सेंटर की स्थापना से और क्या लाभ हो सकता है?

अर्जुनदेव चड्ढा- मीडिया सेंटरों की स्थापना से जहाँ एक ओर प्रचार में गति आएगी, वहीं दूसरी ओर आर्य समाज में नव युवकों को भी जुड़ने के अवसर मिलेंगे, क्योंकि मीडिया के ज्ञान में आज का नवयुवक पारंगत है।

बीना आर्या- आर्य समाज के जितने कार्यक्रम होते हैं, उनसे विशाल समुदाय को कैसे जोड़ा जाए? इस संबन्ध में आप क्या सोचते हैं?

अर्जुनदेव चड्ढा- मेरा मानना है कि आर्य समाज से आम जन को जोड़ने के लिए आर्य समाज के पदाधिकारियों को अपने सेवा कार्य आर्य समाज के परिसर से बाहर निकलकर करने चाहिए। विशेषकर आसपास के पार्कों में, मलिन बस्तियों में सामूहिक यज्ञ करना, पौराणिक परिवारों से सम्पर्क कर उनके घरों पर यज्ञ करवाना। सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों में वैदिक सिद्धांत का प्रचार-प्रसार कर उन्हें आर्य समाज से जोड़ने का कार्य किया जा सकता है।

बीना आर्या- आज हम देखते हैं कि आर्य पुरोहितों की संख्या कम है। इसके लिए आपकी क्या सोच है?

अर्जुनदेव चड्ढा- आर्य समाजों के माध्यम से संस्कार शिविर लगाए जाएं। युवाओं का एक दिवसीय सम्मेलन हो, जिसमें युवाओं को वैदिक विचारधारा से परिचित कराकर उन्हें आर्य जीवन पद्धति से जीवन जीने के लिए प्रेरित किया जाए।

इसी क्रम में जो युवा रुचि लें, उन्हें पुरोहित प्रशिक्षण के लिए त्रिदिवसीय शिविर में भाग लेने के लिए भी प्रेरित किया जाए।

बीना आर्या- आर्य संदेशों के प्रचार-प्रसार में आर्य प्रकाशकों की क्या भूमिका हो सकती है?

अर्जुनदेव चड्ढा- आर्य प्रकाशकों द्वारा आर्य समाज के सिद्धांतों, आर्य महापुरुषों तथा आर्य जीवन पद्धति से संबन्धित छोटे-छोटे व सस्ते ट्रैक्ट छापे जाएं, जिन्हें स्कूलों में विद्यार्थियों को व कोचिंग सेंटरों पर बंटवाया जाए।

बीना आर्या- दूरदर्शन व विभिन्न चैनलों पर दिखाये जाने वाले फलित ज्योतिष के संबन्ध में आपका क्या कहना है?

अर्जुनदेव चड्ढा- समाज में बढ़ रहे पाखण्ड व अंधविश्वासों व फलित ज्योतिष द्वारा फैलायी जा रही भ्रांतियों को दूर करने के लिए लोगों में जागरूकता अभियान चलाने की आवश्यकता है।

बीना आर्या- आर्य परिवारों को जोड़ने के लिए क्या-क्या किया जा रहा है और क्या किया जा सकता है?

अर्जुनदेव चड्ढा- आर्य परिवारों को जोड़ने के लिए किये जाने वाले सार्वदेशिक सभा व दिल्ली सभा द्वारा आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन शुरु किये जा चुके हैं। अब तक चौबीस सम्मेलन सम्पन्न हो चुके हैं। शीघ्र ही २५वां रजत जयंती सम्मेलन सम्पन्न होगा। इन सम्मेलनों द्वारा अब तक सैकड़ों विवाह हो चुके हैं। बदलते वैश्विक परिदृश्य में आज आर्यसमाज का दायित्व बढ़ गया है। ऐसे समय में आर्य समाजियों की जिम्मेदारी भी बढ़ गई है। अतः पुनः हमें आर्यसमाज को उसी मुकाम पर ले जाना है जहाँ पर आजादी के समय में था। जब ब्रिटिश न्यायाधीश की नज़र में 'आर्यसमाजी' की गवाही सत्य का पर्याय थी। ये समय ऋषि के सिद्धान्तों को आगे बढ़ाकर नवीन राष्ट्र के निर्माण में स्वयं की भागीदारी सुनिश्चित करने का है।

बीना आर्या- विश्व स्तर पर आर्य समाज की व्यापकता के संबन्ध में क्या कहना चाहेंगे?

अर्जुनदेव चड्ढा- आर्य समाज लगभग बयालीस देशों में पहुंच चुका है। अब तक आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन बम्बई, हरिद्वार, दिल्ली, मथुरा, हॉलैण्ड, मॉरीशस, साउथ अफ्रीका, नेपाल, वाराणसी इत्यादि स्थानों पर हो चुके हैं, जहाँ विश्व भर से आर्यों की भागीदारी होती है। मुझे इन सभी सम्मेलनों में जाने का अवसर मिला। मैंने देखा कि सम्मेलनों में युवाओं और महिलाओं की सहभागिता बढ़ रही है।

हाल ही में केरल में आयोजित वैदिक कार्यक्रम में ढाई हजार (२५००) कुण्डीय यज्ञ के माध्यम से दक्षिण भारत में आर्य समाज के विस्तार से ख्याति मिल रही है।

जिन प्रदेशों में आर्य समाज नहीं थे, वहाँ भी सार्वदेशिक सभा, दिल्ली सभा के माध्यम से व पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी के सहयोग से आर्य समाजों की स्थापना की जा रही है। देश-विदेश में भी आर्य समाज का परचम लहरा रहा है। २०१९ में दिल्ली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की व्यवस्थाएं देखकर लग रहा था कि जनमानस में अपार उत्साह है। सम्मेलन में दस हजार कुण्डीय एकरूपता यज्ञ स्वयं में आकर्षण का केन्द्र रहा। सम्पूर्ण परिवेश जगमगा रहा था। आकाश उतर कर मानो पृथ्वी पर आ गया हो। बड़ा ही मनोहारी दृश्य था। निश्चय ही इस सम्मेलन से आर्य परिवारों व युवाओं में नई ऊर्जा का संचार हुआ। ये हैं आर्य समाज के बढ़ते कदम।

आर्यजगत की गतिविधियाँ

आगामी कार्यक्रम एक दृष्टि में

◆ १६ से १९ फरवरी-

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ, मुलसम (बागपत), अरविन्द शास्त्री।

◆ २३ फरवरी से १ मार्च-

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ, गुरुकुल बरनावा (बागपत), अरविन्द शास्त्री, गुरुवचन।

◆ २५ से ३१ मई-

चतुर्वेद पारायण यज्ञ, हरवाना शुगर मिल, कुरुक्षेत्र, मुजफ्फरनगर, गुरुवचन शास्त्री, डॉ० योगेश शास्त्री।

प्रवेश सूचना : सत्र 2020-2021

महात्मा सत्यानंद मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल

शास्त्रीनगर, लुधियाना (पंजाब) दूरभाष : ९१-९८१४६२९४१०

(पंजाब का एकमात्र कन्या गुरुकुल)

छठी कक्षा में (आयु+9 से -11 वर्ष से) कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल 100/-रुपये) भरकर 31.03.2020 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवायें। (पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किये जा सकते हैं।

कन्याओं की लिखित प्रवेश परीक्षा 05 अप्रैल 2020 दिन रविवार को प्रातः 8.00 बजे होगी।

सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

-मोहन लाल कालड़ा
(मैनेजर)

देखते देखते कैसे विश्वस्तरीय बना आर्यसमाज गांधीधाम

स्व. लालजीभाई गोहिल ने पाकिस्तान से निर्वासित होकर आए आर्य परिवारों को तथा रेलवे से जुड़े आर्य परिवारों के लोगों को साथ लेकर आर्यसमाज गांधीधाम की स्थापना 18 मार्च 1954 को की थी । स्व. श्री डुंगरोमल जेसवानीजी आर्यसमाज गांधीधाम के मंत्री रहे एवं स्व. श्री मानमलजी जोशी श्रीमद् दयानन्द विद्यालय के आचार्य बने । उस समय प्रवृत्तियाँ समय के अनुसार चलती रही और काफी उतार चढ़ाव आए 1969 में श्रीमद् दयानन्द विद्यालय आर्थिक कठिनाइयों के कारण बन्द हो गया । 1979 में श्री लालजीभाई गोहिल व श्री डूंगरोमल जेस्वाणी परिवार क्रमशः राजकोट व नडियाद चले गये । कुछ समय श्री वालजीभाई पटेल व श्री वस्ताराम टांक क्रमशः प्रधान व मंत्री बने रहे 1984 में श्री मोतीराम जेसवानी जी प्रधान बने । 1986 में उन्हों ने आदिपुर स्थित आचार्य रामचन्द्रजी के आर्य परिवार को आर्यसमाज गांधीधाम से जुड़ने का निमंत्रण भेजा - बस यहीं से परिवर्तन की शुरूआत हुई । 06 जुलाई 1986 को मैं वाचोनिधि आर्य अपने पूज्य माता-पिता के साथ प्रथम बार आर्यसमाज गांधीधाम के सत्संग में शामिल हुआ । शक्ति से भरे 25 वर्षीय युवक होने के नाते मेरे मन में आर्यसमाज के बारे में कई सपने थे पर वे पूरे होते नहीं दिख रहे थे । बूढ़े-बूढ़े पांच सात व्यक्ति सत्संग में उपस्थित थे, कोई उत्साह नहीं था, आपसी छींटाकशी चल रही थी, भवन की मात्र दीवारें ही थी, भवन में एक पंखा या दो ट्यूबलाइट भी नहीं लगीं थीं, टूटा-फूटा अपर्याप्त फर्नीचर था, सबकुछ धूल खा रहा था, सबकुछ शिथिल सा था । मैं ये सब देखकर निराश नहीं हुआ था क्योंकि युवक था व कुछ कर दिखाने की तमन्ना थी व विश्वास था कि पुरुषार्थ से, लगन से सब ठीक हो जाएगा । मैंने अपने सपनों को साकार करने के लिये छोटे-छोटे कदम उठाए, तुरन्त महापुरुषों के चित्र लगवाए तथा यज्ञशाला का सौंदर्यीकरण किया । करीब 1000 रु. खर्च हुए जिसका श्री मोतीराम जेसवानी व श्री कोडूमल आर्य ने समर्थन किया तब से मेरा उत्साह बना, बस मैं आगे ही आगे कार्य करता रहा । 1986 से 2008 तक आर्यसमाज गांधीधाम ने क्या प्रगति की है तथा यह प्रगति क्यों व कैसे हो सकी है इसका विवरण आप आगे पढ़ पाएँगे। यह बात निश्चित है कि, सबकुछ पैसे से नहीं हो सकता इसके लिये समयदानी व्यक्ति होने चाहिये । श्री पुरुषोत्तमभाई पटेल इस आर्यसमाज के प्रधान हैं । उनके नेतृत्व में 1995 से विशेष प्रगति हो रही हे तथा उनकी पूरी टीम किसी भी कार्य के लिये पर्याप्त समय निकाल कर दौड़धूप करती है । मैं वाचोनिधि आर्य प्रतिदिन कम से कम सात-आठ घंटे का समय बैंक की नौकरी के उपरांत 365 दिन इस कार्य हेतु देता हूँ । मुझे मिलने वाली सारी छुट्टियाँ आर्यसमाज के कार्य में ही खर्च हो जाती हैं । भूकंप में एक माह अवैतनिक छुट्टी ली कारण कि, छुट्टियाँ जमा नहीं थीं । आपस में सौम्य, सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखने व व्यावहारिक सूझबूझ के कारण संस्था विशेष प्रगति किया करती है । आपसी अहम न रखना व उसे टकराने न देना यह भी सूझबूझ का हिस्सा है । आपसी गुणों को देखना, दोषों को नजरअन्दाज करना भी हमारी प्रगति में सहायक हुआ है । सभी को साथ लेकर चलना उनसे विचार-विमर्श कर उन्हें संतुष्ट करना भी सूझ-बूझ का हिस्सा है । बड़ों को सम्मान देना उनकी बात मानकर चलना भी आर्यसमाज गांधीधाम की परम्परा रही है । सुमति से चलना, पारिवारिक भावना से चलना हमारा बहुत बड़ा गुण रहा है । हमसे जुड़ा निःस्वार्थी व्यक्ति कभी हमसे अलग नहीं हो पाया है । आर्यसमाज गांधीधाम का कार्य हम पूरी लगन, निष्ठा व ईमानदारी से करते हैं । हमारी पूरी टीम का कोई निजी स्वार्थ नहीं है । संस्था को हम क्या दे सकते हैं ? इस बात का ही ध्यान रहता है । हम सभी पदाधिकारी दान देने की आदत बनी रहे इसलिये हर माह एक मुश्त रकम आर्यसमाज को दान में देते हैं । भवन निर्माण आदि में बड़ीबड़ी रकमें हम स्वयं देते हैं उसके बाद दानदाताओं के पास जाते हैं । मैं वाचोनिधि आर्य हवन की समस्त दक्षिणा आर्यसमाज गांधीधाम को दे देता हूँ । सन-2003 की वर्ष भर की दक्षिणा करीब एक लाख अठारह हजार हुई थी । समय समय पर विघ्नसंतोषी तत्वों ने अपने स्वभाव अनुसार गलतफहमियाँ फैलाकर हमारे कार्य में रोड़े डालने चाहे, लेकिन जनता ने हम पर लगाए दोषों को बड़े नजदीक से देखा, हमारी ईमानदारी व निष्ठा की अग्निपरीक्षा की और इस अग्निपरीक्षा के बाद उनका सहयोग

मिलना बन्द हो जाने की बजाय दुगना-तिगुना हो गया क्योंकि, हमने सतत पारदर्शिता रखी है । हमें विदेश व भारत भर से दान मिल रहा है । गांधीधाम की जनता प्रतिमाह करीब दो लाख रुपया बच्चों के पालन हेतु पिछले आठ साल से दे रही है । गांधीधाम की जनता हमारे सारे कार्य व लगन को देखकर दान दे रही है और हमें बड़ी इज्जत के साथ देखती है क्योंकि हमारा सारा कार्य पारदर्शी रहा है, जिसे कोई भी देख सकता है । हमने आर्यसमाज गांधीधाम में जहाँ नये-नये भवन बनाये हैं वहीं उनका उपयोग प्रवृत्ति बढ़ाने में किया है । सतत वेद प्रचार की जन

सारे कार्यकर्ता-पदाधिकारी आपस में एकदूसरे का टीम बल बनकर काम करने वाले को आगे बढ़ने को प्रोत्साहित करते हैं (उसका हाथ खींचते हैं)। इसी प्रकार हमारी आर्यसमाज में गुटबाजी है ही नहीं तभी इतना तेजी से विकास हो पा रहा है । आर्यसमाज गांधीधाम का सबसे बड़ा सौभाग्य रहा है कि, सारे कार्यकर्ता व पदाधिकारी काले बाल वाले युवक हैं जिनका कार्य करने का ढंग, उत्साह की सोच निराली है। जो सोचते हैं उस पर तुरन्त अमल कर उसे पूरा कर डालते हैं। हमारी टीम का कभी भी नकारात्मक सोच नहीं रहा है और हम कभी किसी के विरुद्ध नहीं सोचते हैं । रचनात्मक कार्यों से छुट्टी ही नहीं मिलती कि किसी के विरुद्ध बुरा सोच पाएं । हमारी टीम कभी निराश नहीं होती । आशा व आत्मविश्वास से भरी टीम सतत कार्य करने को प्राथमिकता देती है । ऊपर लिखित कई सारे गुणों के साथ हमारी सफलता का एक और कारण है जनसेवा प्रकल्प शुरू करना । हमने महर्षि दयानन्द सरस्वती के बताये मार्ग पर चलते हुए आर्यसमाज के छठे नियम शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है को लक्ष्य बनाया । शारीरिक उन्नति हेतु योगासन, ओषधीय चिकित्सा प्रवृत्तियाँ, आध्यात्मिक उन्नति हेतु योग शिविर, प्रवचन, सत्संग समारोह, साहित्य वितरण आदि कार्य किये हैं लेकिन सामाजिक उन्नति एक ऐसा विषय है जिसे जितना चाहें बढ़ाया जा सकता है । हम अन्य संस्थाओं की ओर देखें तो वे अपना स्थान सामाजिक सेवा के प्रकल्प चलाकर बनाये हुए हैं । हमनें भी मेडिकल ऑक्सीजन बैंक पूरे जिले के लोगों के लिये शुरू की । कंडला के समुद्री तूफान में राहत कार्य किया, कच्छ में आये विनाशकारी भूकंप में राहत व बचाव कार्य किया और भूकंप में अनाथ हुए बालकों को हम पाल रहे हैं । इन सब कार्यों के कारण हमें जनता पर्याप्त धन दे रही है, मान-सम्मान दे रही है और हमें अनेक अवैतनिक कार्यकर्ता मिले हैं जो जनसेवा प्रकल्पों में अपने समय का योगदान कर रहे हैं साथ ही कुछ तो वैदिकधर्मी भी बन गए हैं । सुप्रबंधन सबको अच्छा लगता है परन्तु हम प्रायः आर्यसमाज में छोटे कार्यक्रम में भी सुप्रबंधन नहीं कर पाते हैं जबकि अन्य संस्थाओं में 5-5, 10-10 हजार लोगों के लिये सारी व्यवस्थाएं सुनियोजित होती हैं । हम सुप्रबंधन के लिये करने का समय नहीं निकालते इस लिये हमारे कार्यक्रम आकर्षक नहीं बनते । आर्यसमाज गांधीधाम में हम इतनी सारी प्रवृत्तियाँ, इतने सारे प्रकल्प चला रहे हैं, लोग आश्चर्य करते हैं कि इतना सब कैसे हो पाता है ? हम उन्हें टाटा बिरला का उदाहरण देते हैं कि, पूरे भारत में उनके उद्योग हैं और मालिक एक ही है, मात्र सुप्रबंधन से सारे कार्य हो पा रहे हैं । हम भी सुप्रबंधन हेतु स्वयं पर्याप्त करने के लिये समय निकालते हैं । पर्याप्त मात्रा में कर्मचारी रखे हुए हैं और उन्हें पर्याप्त वेतन भी दे रहे हैं । आज कुल चालीस वैतनिक कर्मचारी हैं और प्रतिमाह करीब दो लाख रूपए मात्र वेतन स्वरूप देते हैं । उन बत्तीस परिवारों को रोजीरोटी आर्यसमाज दे रहा है। इसके अलावा 15-20 अवैतनिक कार्यकर्ता-पदाधिकारी जुटे हुए हैं। सभी पूर्ण स्व-अनुशासित हैं। आज वैदिक संस्कार केन्द्र के कारण हम अनेक कार्य व प्रवृत्तियाँ बढा पाने में सक्षम हो पा रहे हैं हमने भवन के एक इंच हिस्से को कभी किराये पर नहीं दिया, न उसमें दूकाने बनने दीं । हमने प्रवृत्तियों पर पर्याप्त ध्यान दिया, पैसे कहाँ से आयेंगे ? पैसे नहीं हैं तो काम कैसे करें ? इन सब बातों पर ध्यान नहीं दिया । हमने आर्यसमाज गांधीधाम में आय का मुख्य स्त्रोत दान को बनाया है, विवाह-संस्कारादि से प्राप्त आय को नहीं । वर्ष में हमारे यहां मुश्किल से 25 विवाह संस्कार होते हैं । हमारा एक अनुभव रहा है कि धन के अभाव से कोई काम नहीं रुकता, यदि रुकता है तो काम करने वालों के अभाव से हमने अनेक कार्यकर्ता बनाये हैं जो हमारी निधि हैं । हमारे सारे प्रकल्प जैसे वैदिक संस्कार केन्द्र, जीवनप्रभात आदि बनाने के लिए हमने पहले धन नहीं मांगा अपितु निर्माण शुरू किया उसके बाद लोगों से धन माँगने गये और निर्माण पूर्ण होता गया । हम शुरू करते हैं व प्रकल्प पूर्ण होने पर सारा कर देते हैं । हमारी आर्यसमाज में हम नहीं बनाते न बनने देते हैं क्योंकि कुर्सी ही लडाई का कारण बनती है । हम मेशा

15-20 लाख रुपये के कर्ज के नीचे दबे रहते हैं पर बिना चिंता के उत्साह से काम करते रहते हैं । हम प्रति वर्ष लाखों रुपए का दान प्राप्त करते है पर हमारा हर पदाधिकारी, हर सदस्य, हर स्टाफ कर्मचारी अपनी आय में से कुछ न कुछ दान देता है । हर प्रकल्प के लिए हम दान पहले स्वयं देते है फिर अन्यों के पास जाते है । हर पदाधिकारी वर्ष में 10 से 25 हजार रुपए तक का दान तो अवश्य देता ही देता है ।

हम जहाँ से जो भी अच्छा मिलता है उसे ग्रहण करते हैं । आर्यसमाज के सिद्धांतों का पालन करते हुए हम अन्य संस्थाओं के कार्यो में जो अच्छा लगता है उसे तुरंत अपना लेते हैं क्योंकि अन्य संस्थाओं में समर्पण भावना, सुव्यवस्था, भव्यता आदि अनेक गुण

जीवंतता का प्रतीक है आर्यसमाज गांधी धाम

ऐसे हैं, जिसे आर्यसमाज को अपनाना ही चाहिए । हम परख शक्ति नहीं है इस लिए वे बाद में पछताते हैं । हम तो उस व्यक्ति का साथ देते हैं जो हमेशा अपनी गलती स्वीकार करने में भी देर नहीं करते न उनको छुपाते हैं या बचाव करते हैं । इसी कारण से हम हमेशा लचीले स्वभाव के बने रहते हैं । आर्यसमाज के अनेक समर्पित व्यक्ति हुए तथा आज भी हैं जिन्हें अपने नाम की जरा भी जरूरत नहीं पड़ी । हमने अपने कार्यकाल में ऐसे व्यक्तियों को पहचान कर उन्हें अपना आदर्श बनाया है । पर हमें कई ऐसे व्यक्ति मिले जो मंच तक तो ठीक लगे पर वे स्वयं व्यक्ति पूजा से घिरे दिखे, उन्हें आर्यसमाज के नाम का उपयोग कर स्वयं को प्रतिष्ठित कराते हुए देखा, ऐसे लोगों को हमारी पूरी टीम परख गई व हम उनसे तुरंत अलग हो गये अनेक आर्यसमाज के अधिकारियों में ऐसी वैदिक धर्म की उन्नति में लगा हो और जो महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार करने में पूर्ण समर्पित भाव से लगा हो ।

आर्यसमाज में अच्छे, रचनात्मक कार्य बहुत हो रहे हैं परंतु आर्यसमाज के लोग उन कार्यो की चर्चा कर गौरव की अनुभूति नहीं करते जब कि निराशा की बातें व कमियों की चचाओं से आर्यसमाज में निराशा बढाते हैं । आर्यसमाज में कुछ कार्य नहीं हा रहा ऐसी निराशाजनक बात को सुलझाने में हम लगे हुए है और हमें गर्व है कि भूकम्प में कार्य कर- के एवं जीवनप्रभात के माध्यम से हमने यह बात सिद्ध कर दी है और जीवनप्रभात के बच्चों में से कई सुयोग्य बच्चे भविष्य में आर्यसमाज का गौरव देश - विदेश में बढ़ायेंगे । इन निराधार बच्चों को गोद लेने के लिए हमें किसी ने बाध्य नहीं किया था परंतु इन बच्चों को अनेक विदेशी तथा विधर्मी संस्थाएँ ले जा रही थी इस चुनौती को स्वीकार करते हुए हमने इन्हें अपने पास रखा है और रखा भी है तो इतनी अच्छी तरह जैसे अपने घर के बच्चे रहते हैं । गुजरात के तत्कालीन राज्यपाल श्री कैलाशपति मिश्रजी जब बच्चों से मिलने आये थे तब उन्होंने कहा कि मैं बच्चों से मिलने जा रहा हूँ उनकी मायूसी मुझसे देखी नहीं जायेगी लेकिन यहाँ उनसे मिलकर मुझे बेहद खुशी हो रही है - इन्हें आप जिस अच्छी तरह पाल रहे हैं तो कहने का मन होता है कि अनाथ शब्द को शब्दकोश से हटा देना चाहिए ।

हमारी आर्यसमाज आने वाले प्रत्येक व्यक्ति का पर्याप्त सम्मान करती है, उनका परिचय प्राप्त करती है, उन्हें पर्याप्त समय देती है । साप्ताहिक सत्संग में आने वाले हर नये व्यक्ति का हम परिचय देकर स्वागत किया करते हैं जो अनेकों आर्यसमाज में नहीं होता । बाहर से आने वाले व्यक्तियों की निवास व भोजन की व्यवस्था का भी ध्यान रखते हैं । उनका पता हमेशा के लिए अपने कम्प्युटर में डाल देते हैं और उन्हें भविष्य के हर कार्यक्रम की जानकारी देते हैं । विदेश से आने वाले व्यक्तियों के पास समय बहुत कम होता है, हम उन्हें लेने एयरपोर्ट पहुंच जाते है व सब जगह घुमा कर पुनः एयरपोर्ट छोडने जाते हैं । विदेश से आने वालों के ठहरने के लिये एयरकंडीशन अतिथिगृह की व्यवस्था भी की है । हमारा स्वभाव हमेशा सहयोगियों तथा दानदाताओं के प्रति कृतज्ञता का रहा है । उनके साथ हमेशा मान - सम्मान का व्यवहार रहा है । इस कारण दानदाता शुभचिंतक लगातार बार - बार हमें सहयोग करते रहते हैं । समाज में अलग अलग मान्यता विश्वास वाले लोग रहते हैं - हम अपने प्रकल्पों हेतु सभी से सहयोग लेते है । उनका धन्यवाद करते हैं । उनसे सम्बंध रखते हैं । उन्हें अपने कार्यक्रमो में बुलाते हैं - उनके कार्यक्रमो में जाते है । वे आर्यसमाज के बारे में ज्यादा जानकारी प्राप्त करते है, आर्यसमाज के प्रति उनकी रूचि, उनका सम्मान बढ़ता है वे आर्यसमाज के प्रशंसक बन जाते हैं । हमने समाज में लोगों को जोडा हैं तोड़ा नहीं हैं । मंडन द्वारा (कार्य करके, आचरण करके) हम लोगों को अपना बनाते हैं । हमारी आर्यसमाज में सामूहिक नेतृत्व है । कोई एक व्यक्ति ही जो चाहे करता रहे, ऐसा कभी नहीं होता । हर पदाधिकारी, हर शुभचिंतक की प्रतिभा का उपयोग हमने आर्यसमाज गांधीधाम के विकास में किया है । इस कारण वे प्रतिभाएँ हमारे साथ हमेशा हमेशा जुड़ी रहती हैं । और प्रतिभा का लक्ष्य एक ही है आर्यसमाज के कार्यक्रम आगे कैसे बढ़ें ? उसमें कैसे हम सहयोगी बनें ?

आर्यसमाजों ने अनेकों प्रकल्पों को पूरा किया है लेकिन अनुभव बताता है कि वे प्रकल्प जब पूरे हुए तो उनके संचालक भी स्वतंत्र बने व धीरे धीरे वे आर्यसमाज से स्वतंत्र रूप में कार्य करने लगे और आर्यसमाज को जो श्रेय - गौरव मिलना चाहिए था वह नहीं मिला । अनुभव के आधार पर हमने सारे प्रकल्प एक ट्रस्ट के अंतर्गत ही चलने दिये हैं । अलग समितियां अलग संचालक नहीं बनाये, पूरा नियंत्रण आर्यसमाज गांधीधाम के पदाधिकारियों का है । इस कारण आर्यसमाज गांधीधाम सशक्त बन कर सबके समक्ष प्रस्तुत है । हमारे पदाधिकारी हर तीन वर्ष में चुने जाते हैं वो भी सर्वसम्मति से । हम बार - बार प्रधान व मंत्री नहीं बदलते क्योंकि वे जिम्मेदारीपूर्वक काम कर रहे हैं लेकिन हमारे यहाँ ऐसी पीढ़ियां भी मौजूद है जो अनेक कार्य स्वतंत्र रूप से करने का अनुभव प्राप्त करती जा रही है इसलिये उत्तराधिकारियों की कभी भी कमी महसूस नहीं होगी । हमारे यहाँ कोई भी अधिकारी पदलोलुप नहीं है । बडा दान देने वाला व्यक्ति ट्रस्टी बनने की शर्त पर दान देता है तो हम उसे नहीं स्वीकारते हैं । यदि भूकम्प न आया होता तो हमारी प्रसिद्धि हमारा कार्य विस्तार इतना न हो पाता ।

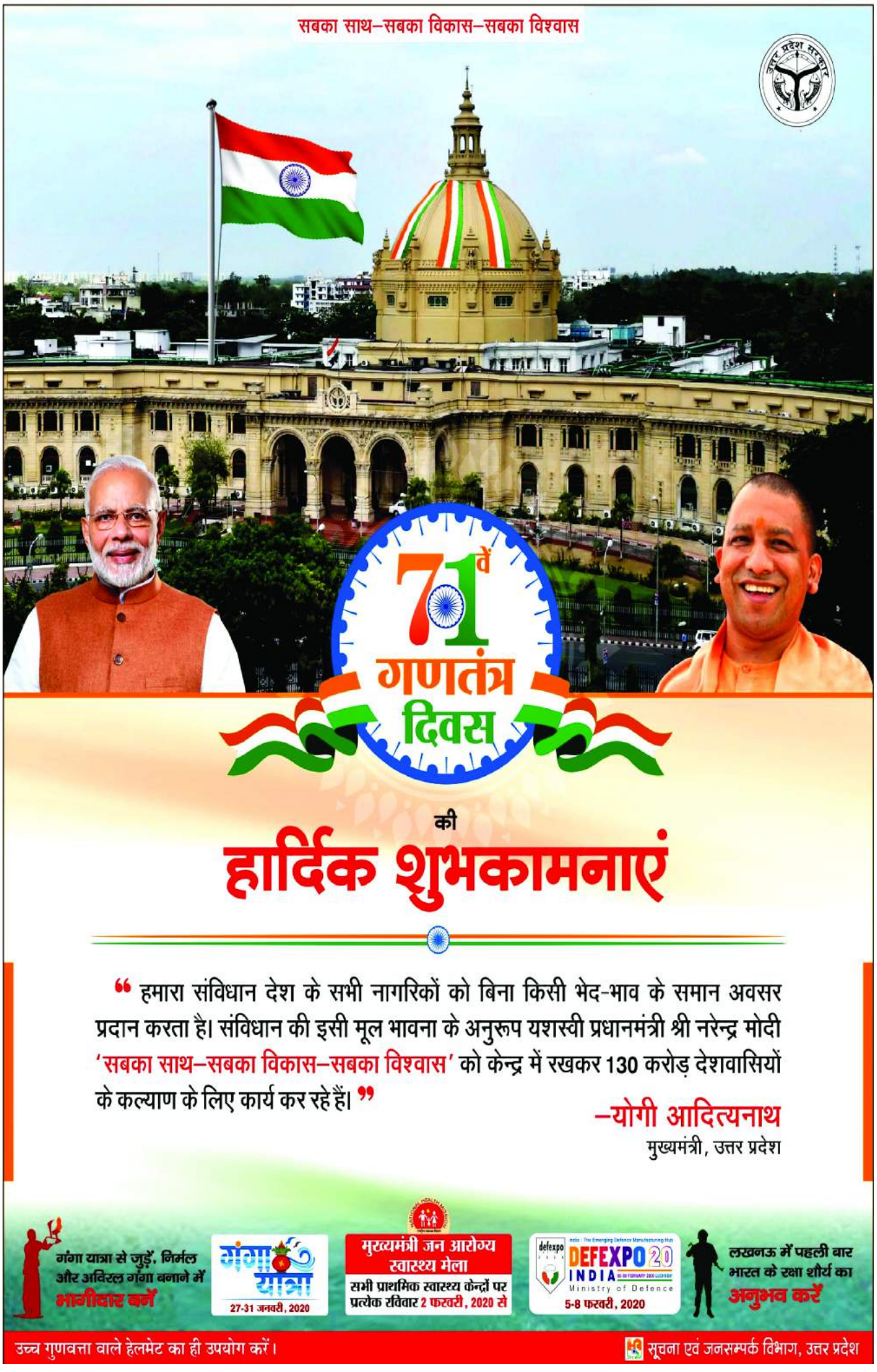

राष्ट्र निर्माण पार्टी एवं ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट के संस्थापक ठाकुर विक्रम सिंह के उद्गार

आर्यों अभी भी समय है जागो

१९ सितम्बर २०१८ को मेरे जीवन में ७५ वर्ष पूर्ण होने पर सभी आर्य और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने अमृत महोत्सव मनाय। उसके बाद मुझे अमृत की ओर ही जाने का यत्न करना चाहिए था। जो नहीं हो पाया, क्योंकि कई कार्य अधूरे रह गये थे। एक आवश्यक कार्य यह था कि जो आर्य संन्यासी, विद्वान, उपदेशक, भजनोपदेशक, धर्माचार्य समाज की सेवा कर रहे हैं, उनक संक्षिप्त परिचय का एक ऐतिहासिक ग्रन्थ 'आर्य समाज के गौरव' निकलना चाहिए। कुछ सामग्री थी, कुछ और इकट्ठी की, लेकिन मेरे मन के अनुरूप वह नहीं हो पाया, तो डॉ० धर्मेन्द्र कुमार जी से प्रार्थना की कि आप इस कार्य को पूरा करें और इस ग्रन्थ को अवश्य संपादित करें। उन्होंने भी काफी पुरुषार्थ किया है, अब जैसा भी बन पड़ा ग्रन्थ आपके सामने है। सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभाएं सब उदासीन हैं। पाखण्ड बढ़ते जा रहे हैं। आर्य समाज. अपनी स्मारिका एवं अनेक पत्र-पत्रिकाएं निकाल रही हैं, लेकिन पत्र-पत्रिकाएं जो व्यक्तिगत रूप से निकाल रहे हैं, जो प्रकाशन व्यक्तिगत रूप से कार्य कर रहे हैं। सभी सभाएं, सभी समाजें, भवनों पर कब्जा किए बैठी हैं और समाजें क्लब बन गयी हैं। कुछ विद्वान भी अनेक कुण्डी यज्ञ लेकर बैठ गये हैं। इन पाखण्डों का मुकाबला कौन करेगा?

चंद कांटे ही रह गये हैं, बहारों की यादगार,
गुलशन में बचेगा क्या गर ये भी निकल गये।

आज मुझे एक दर्जन संन्यासी दिखाई नहीं देते, जो स्वामी दीक्षानन्द जी जैसी कथाएं कर सकते हों। एक दर्जन उपदेशक दिखाई नहीं देते जो शिवकुमार शास्त्री जी, प्रोफेसर रत्नसिंह जैसी कथाएं करते हों, चौ० पृथ्वी सिंह बेधड़क, कुं० सुखलाल आर्य मुसफिर, पूज्य अमर स्वामी जी महाराज, स्वामी ओमानन्द सरस्वती जिस पीढ़ी को हमने देखा, आज का आर्य समाज और हम कहां खड़े हैं, विचार करें? आप सब मिलकर पाखण्डों पर टूट पड़ो, पाखण्डी लोगों ने सत्ता कब्जा ली है। मुस्लिम तुष्टीकरण अंधाधुंध चल रहा है। ईसाई, कम्युनिस्ट, नक्सली, आतंकवादी गढ़ बन रहे हैं, आप आंख बन्द करके ओम् ध्वनि कर रहे हैं। आपके बोलने से भारत माता की जय- वैदिक धर्म की जय हो जाएगी। आर्यों को सौ करोड़ का फंड बनाना चाहिए और कम से कम भारत के ३०० जिलों में गाड़ियों में भजन-मण्डली प्रचार करें- सस्ता साहित्य, सत्यार्थप्रकाश घर-घर पहुंचाएं और आवश्यकता हो तो आर्यवीर दंड व्यवस्था मजबूत रखें। शुद्धि और शास्त्रार्थ का बिगुल बजा दो। आर्य समाज बढ़े उद्योगपति कम से क १० प्रतिशत तो प्रचार में लगाओ, नहीं तो तुम्हारी संतानें पूछेंगी- हमारे भविष्य की रक्षा तुमने कैसे की, बताओ तो सही? लहौर का डी०ए०वी० कहां है? आर्य समाज अनारकली कहां है? प्रादेशिक सभा में १०० से ज्यादा उपद. शक, भजनोपदेशक थे। पंजाब सभा में भी १५० से ज्यादा उपदेशक भजनोपदेशक थे। जिला सभाओं में भजन मण्डली उपदेशक थे। पौराणिक पत्थर पूजा करते थे। आर्य समाज पत्थर की यज्ञशाला पर करोड़ रुपये खर्च करती है और १०० ग्राम घी का हवन करती है। अब भी आर्य समाज जीवित है, तो केवल कन्या गुरुकुल और गुरुकुलों के कारण जीवित है।

आर्य बनो और जहां को बना दो,
जो कहते हो, दुनिया को करके दिखा दो।
है ईश्वर एक वेद उसकी वाणी,
पैगाम ऋषि का घर-घर पहुंचा दो॥

–ठाकुर विक्रम सिंह
राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्र निर्माण पार्टी

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत)-244221
से प्रकाशित एवं प्रसारित
फोन : 05922-262033,
9412139333 फैक्स- 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mail :
aryawartkesari@gmail.com

संरक्षक
स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती
प्रबन्धक सम्पादक
सुमन कुमार 'वैदिक'
(मोबाए : 9456274350)
साहित्य सम्पादक
डॉ. बीना 'आर्या'
सह सम्पादक :
पं. चन्द्रपाल 'यात्री' डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार, डॉ. ब्रजेश चौहान
टंकण - विकास अग्रवाल/इशरत अली
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

जाने चले जाते हैं कहां दुनिया से जाने वाले
अपने प्रियजनों को उनकी पुण्यतिथि एवं स्मृति दिवस पर हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित कर नमन करें दिव्यजनों को।
चित्र सहित
आर्यावर्त केसरी के प्रकाशन यज्ञ में प्रदान करें 501/- की पावन आहूति।
पता- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन,
गोकुल विहार अमरोहा-244221
सम्पर्क सूत्र : 9412139333